

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी रणनीति के अंतर्गत तय किया कि कंपनी सबसे पहले मुगल शासकों से भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त करेंगे। तथा इसके बाद भारत के तटीय क्षेत्रों में अपनी फैक्ट्रियां स्थापित करेंगे। भारत से व्यापार करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने थॉमस स्टीफन को 1603 ईसवी में कंपनी के प्रतिनिधि के रूप में, मुगल काल के शासक अकबर के दरबार में भेजा। परंतु वह मुगल शासक को अपनी बात समझाने में असफल रहा, क्योंकि उसे फारसी भाषा का ज्ञान नहीं था। इसके बाद कंपनी ने दोबारा कैप्टन हॉकिंस के प्रतिनिधित्व में भारत के लिए 'हेक्टर' नाम के जहाज को इंग्लैंड से रवाना किया। जिसका उद्देश्य भारत के साथ सिर्फ व्यापार करना था। कैप्टन हॉकिंस सबसे पहले सूरत के बंदरगाह पर उतरा। 'सूरत', उस समय के, भारत के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक था। 24 अगस्त 1608 ईसवी में कैप्टन हॉकिंस, भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए, मुगल शासक जहांगीर के दरबार में पहुंचा। कैप्टन हॉकिंस ने जहांगीर से फारसी भाषा में बात की, जिससे प्रसन्न होकर जहांगीर ने उसे 400 का मनसब तथा इंगलिश खान की उपाधि प्रदान की। साथ ही साथ सूरत में अस्थाई फैक्ट्री को स्थापित करने की भी अनुमति प्रदान की। परन्तु पुर्तगालियों के प्रतिरोध और शत्रुतापूर्ण रवैये ने कम्पनी को भारत के साथ सहज ही व्यापार शुरू नहीं करने दिया। पुर्तगालियों से निपटने के लिए अंग्रेजों को डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता और समर्थन मिला और दोनों कम्पनियों ने एक साथ मिलकर पुर्तगालियों से लम्बे अरसे तक जमकर तगड़ा मोर्चा लिया। 1612 ई. में कैप्टन बोस्टन के नेतृत्व में अंग्रेजों के एक जहाज़ी बेड़े ने पुर्तगाली बेड़े को स्वाली में पराजित किया। जिससे खुश होकर जहांगीर ने उसे फैक्ट्री खोलने की अनुमति दे दी। 1612 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूरत में अपनी फैक्ट्री स्थापित की। 1613 ई. में कम्पनी को एक शाही फरमान मिला और सूरत में व्यापार करने का उसका अधिकार सुरक्षित हो गया, जिसके फलस्वरूप वे पुर्तगालियों के प्रतिशोध या आक्रमण से पूरी तरह सुरक्षित हो गये। 1615-18 ई. में सम्राट जहांगीर के समय ब्रिटिश नरेश जेम्स प्रथम के राजदूत सर टामस रो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए कुछ विशेषाधिकार प्राप्त कर लिये।

1611 ई. में दक्षिण पूरब समुद्रतट पर सर्वप्रथम अंग्रेजों ने मुसलीपट्टम में व्यापारिक कोठी की स्थापना की। मछलीपट्टनम आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले का एक नगर है। किन्तु कम्पनी को पहली महत्वपूर्ण सफलता मार्च, 1640 ई. में मिली, जब उसने विजयनगर शासकों के प्रतिनिधि चन्द्रगिरि के राजा से आधुनिक चेन्नई नगर का स्थान प्राप्त कर लिया। जहाँ पर उन्होंने शीघ्र ही सेण्ट जार्ज किले का निर्माण किया। 1661 ई. में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह के दहेज में बम्बई का टापू मिल गया। चार्ल्स ने 1668 ई. में इसको केवल 10 पाउण्ड सालाना किराये पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया। इसके बाद 1669 और 1677 ई. के बीच कम्पनी के गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक बम्बई नगर की नींव डाली।

1687 ई. में कम्पनी के एक वफादार सेवक जॉब चारनाक ने बंगाल के नवाब इब्राहीम ख़ाँ के निमंत्रण पर भागीरथी की दलदली भूमि पर स्थित सूतानाती गाँव में कलकत्ता नगर की स्थापना की। बाद को 1698 ई. में सूतानाती से लगे हुए दो गाँवों, कालिकाता और गोविन्दपुर, को भी इसमें जोड़ दिया गया। इस प्रकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 90 वर्षों के अन्दर तीन अति उत्तम बन्दरगाहों—बम्बई, मद्रास और कलकत्ता पर अपना अधिकार कर लिया। इन तीनों बन्दरगाहों पर किले भी थे। ये तीनों बन्दरगाह प्रेसीडेंसी कहलाये और इनमें से प्रत्येक का प्रशासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के 'कोर्ट ऑफ़ प्रोपराइटर्स' द्वारा नियुक्त एक गवर्नर के सुपुर्द किया गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का संचालन लन्दन में 'लीडल हॉल स्ट्रीट' स्थित कार्यालय से होता था।

भारत में फ्रांसीसियों का आगमन

फ्रांसीसियों ने भारत में अन्य यूरोपीय कंपनियों की तुलना में सबसे बाद में प्रवेश किया। भारत में पुर्तगाली डच अंग्रेज तथा डेन लोगो ने इनसे पहले अपनी व्यवसायिक कोठियों की स्थापना कर दी थी। सन 1664 ई. में फ्रांस की सम्राट लुइ 14वें की समय उनके मंत्री कोलबर्ट की प्रयासों से फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनी 'एस्ताबिलिशमेंट फ्रांसिस द एल इन्डे (फ्रांसिसी कंपनी) की स्थापना हुई। इस कंपनी

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

दिया। मद्रास को वापस लौटाना डूप्ले की इच्छा के विरुद्ध था। अतः बुर्डोने के वापस जाते ही उसने मद्रास पर आक्रमण करके पुनः अपने अधिकार में कर लिया।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध सेन्ट टोमे के युद्ध के लिए स्मरणीय है। जब मद्रास में अंग्रेज और फ्रांसीसी आमने-सामने थे। तब अनवरुद्दीन शान्त था क्योंकि डूप्ले ने उसे आश्वासन दिया था कि वह मद्रास पर विजय प्राप्त करके उसे सौंप देगा। किन्तु मद्रास विजय के उपरान्त डूप्ले ने ऐसा नहीं किया तो नवाब ने अपनी मांग स्वीकार कराने के उद्देश्य से पुत्र महफूज खाँ के नेतृत्व अपनी विशाल सेना भेजी। दूसरी तरफ फ्रांसीसियों ने भी कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में एक छोटी सी सेना भेजी। दोनों सेनाएं अडयार नदी के तट पर सेन्ट टोमे नामक स्थान पर आमने सामने हुई। इस युद्ध में फ्रांसीसियों को विजय मिली।

ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार को लेकर 1748 ई. में दोनों देशों बीच ए-ला-शापल की सन्धि सम्पन्न हुई। जिसके फलस्वरूप यूरोप में युद्ध बन्द हो गया। अतः उन्हें भारत में भी युद्ध बन्द करना पड़ा। सन्धि के अनुसार अंग्रेजों को भारत में मद्रास तथा फ्रांसीसियों को अमेरिका में लुईसबर्ग पुनः प्राप्त हो गया।

युद्ध के अन्त में दोनों दल बराबर रहे। इस युद्ध का कोई विशेष महत्व नहीं था। क्योंकि यह युद्ध अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का विस्तार मात्र था। इस युद्ध से भारत की सीमा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ दोनों दल यथावत रहे, किन्तु इस युद्ध ने भारतीय राजाओं की दुर्बलता को प्रकट कर दिया। इस युद्ध से स्पष्ट हो गया कि भली भाँति प्रशिक्षित और अनुशासित यूरोपीय सेना अनुशासनहीन विशाल भारतीय सेना से अधिक श्रेष्ठ है। इस युद्ध से जल सेना का महत्व भी स्पष्ट हो गया।

द्वितीय युद्ध (1749 – 1754 ई.) – कर्नाटक के प्रथम युद्ध की सफलता से डूप्ले की महत्वाकांक्षा बढ़ गई थी। उसने फ्रांसीसी राजनैतिक प्रभाव के प्रसार के उद्देश्य से भारतीय राजवंशों के परस्पर झगड़ों में भाग लेने की सोची। जिसके कारण द्वितीय एंग्लो-फ्रेंच युद्ध हुआ। आसफजाह (जिससे हैदराबाद में लगभग पूर्ण स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया था) की मृत्यु 21 मई 1748 ई. में हो गयी। जिससे आसफजाह के पौत्र मुजफ्फरजंग तथा पुत्र नासिरजंग में उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया। जिसमें फ्रांसीसी मुजफ्फरजंग को तथा अंग्रेज नासिरजंग को हैदराबाद का सूबेदार बनाना चाहते थे। ठीक इसी समय कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के खिलाफ उसके बहनोई चन्दा साहब ने नवाब पद के लिए अपना दावा पेश किया। फ्रांसीसियों ने चन्दा साहब का समर्थन किया। अंग्रेज अनवरुद्दीन के पक्ष में थे।

3 अगस्त 1749 को चन्दा साहब, मुजफ्फरजंग तथा फ्रांसीसी सेनाओं ने संयुक्त होकर कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन पर आक्रमण कर दिया। अनवरुद्दीन मारा गया तथा उसका पुत्र मुहम्मद अली भाग गया। इस विजय के उपरान्त चन्दा साहब कर्नाटक का नवाब बन गया। उसने फ्रांसीसियों को पांडिचेरी के निकट 80 गाँव पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये।

फ्रांसीसियों के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए अंग्रेजों ने नासिरजंग को कर्नाटक पर आक्रमण करने के लिए भड़काया। उसने 1750 ई. कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया। इस संघर्ष में नासिरजंग मारा गया। मुजफ्फरजंग को हैदराबाद का नया निजाम घोषित कर दिया गया। मुजफ्फरजंग ने बुस्सी के अध्यक्षता में एक फ्रांसीसी सेना की टुकड़ी को हैदराबाद में रखना स्वीकार किया। मुजफ्फरजंग फ्रांसीसी सेनापति बुस्सी को साथ लेकर कर्नाटक से हैदराबाद के रवाना हुआ। किन्तु मार्ग में उसकी हत्या कर दी गयी। अतः बुस्सी ने नासिरजंग के छोटे भाई सलावतजंग को हैदराबाद के सिंहासन पर बैठाया। कृतज्ञ निजाम ने हैदराबाद रियासत के उत्तरी प्रदेश फ्रांसीसियों को उपहार स्वरूप दिये।

अनवरुद्दीन के पुत्र मोहम्मद अली ने भागकर त्रिचनापल्ली में शरण ली। अतः चन्दा साहब और फ्रांसीसियों ने मिलकर त्रिचनापल्ली का मई 1751 ई. में घेराव किया। इधर मोहम्मद अली की सहायता के लिए अंग्रेज गवर्नर थॉमस साण्डर्स ने क्लाइव के नेतृत्व में एक सेना भेजी। स्थित यह बनी कि न तो फ्रांसीसी त्रिचनापल्ली जीत पाये और न ही क्लाइव इस घेरे को तोड़ सका।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

निर्णायक सिद्ध हुआ। इस युद्ध ने भारत में फ्रांसीसियों की शक्ति का पूर्ण रूप से पतन कर दिया। अंग्रेजों के लिए भारत में मार्ग प्रशस्त हो गया क्योंकि पुर्तगालियों और डचों को तो वे पहले ही पराजित कर चुके थे।

1947 में भारत की आजादी के स्वतंत्र भारत के साथ फ्रांस की भारतीय संपत्ति का संघ को प्रोत्साहन मिला। तत्काल ही मछलीपट्टनम, कोझिकोड और सूरत, अक्टूबर 1947 में स्वतंत्र भारत को सौंप दिये गये। 1948 में फ्रांस और भारत के बीच एक समझौते हुआ जिसके अनुसार फ्रांसीसी भारत के नागरिकों व उनके राजनीतिक भविष्य का निर्धारण करने के लिए एक चुनाव कराने पर सहमत हुई। चन्दननगर 2 मई 1950 भारत को सौंप दिया गया था। उसके बाद 2 अक्टूबर 1955 को इसका विलय पश्चिम बंगाल में कर दिया गया। 1 नवम्बर 1954 को, पॉन्डिचेरी, यानम, माहे और कराईकल के चार परिक्षेत्रों को भारत के साथ एकीकृत कर दिया गया और यह पुदुच्चेरी संघ शासित प्रदेश बन गया। 1962 में पेरिस में फ्रांसीसी संसद ने भारत के साथ पुदुच्चेरी संघ के विलय की पुष्टि की उसके बाद पुदुच्चेरी आधिकारिक तौर पर भारत का अभिन्न अंग बन गया। इसी के साथ भारत में 185 वर्ष पुराना फ्रांसीसी शासन खत्म हो गया।

यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों से संबद्ध व्यक्ति

वास्कोडिगामा	भारत आने वाला प्रथम यूरोपीय यात्री
पेड्रो अल्वरेज कैब्राल	भारत आने वाला द्वितीय पुर्तगाली
फ्रांसिस्को डी अल्मेडा	भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर
जॉन मिल्देनहॉल	भारत आने वाला प्रथम ब्रिटिश नागरिक
कैप्टन हॉकिंस	प्रथम अंग्रेज दूत जिसने सम्राट जहांगीर से भेंट की
जैराल्ड ऑगियार	बम्बई का संस्थापक
जॉब चार्नोक	कलकत्ता का संस्थापक
चार्ल्स आयर	फोर्ट विलियम (कलकत्ता) का प्रथम प्रशासक
विलियम नारिश	1638 ई. में स्थापित नई ब्रिटिश कंपनी 'ट्रेडिंग इन द ईस्ट' का दूत जो व्यापारिक विशेषाधिकार हेतु औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुआ
फ्रैंकोइस मार्टिन	पॉन्डिचेरी का प्रथम फ्रांसीसी गवर्नर
फ्रांसिस डे	मद्रास का संस्थापक
शोभा सिंह	बर्धमान का जमींदार, जिसने 1690 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया
इब्राहिम खान	कालिकाता, गोविंदपुर तथा सूतानटी का जमींदार
जॉन सुरमन	मुगल सम्राट फर्रुखसियर से विशेष व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने वाला शिष्टमण्डल का मुखिया
फादर मोंसरेट	अकबर के दरबार में पहुँचने वाले प्रथम शिष्टमंडल के अध्यक्ष
कैरोन फ्रैंक	इसने भारत में प्रथम फ्रांसीसी फैक्ट्री की सूरत में स्थापना की

बंगाल में ब्रिटिश शक्ति का उदय

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

25 जून, 1757 को मीर जाफर मुर्शिदाबाद वापस आ गया और अपने-आप को नवाब, घोषित कर दिया। इस सफलता की प्राप्ति में दिए गए सहयोग के कारण उसने अंग्रेजों को 24 परगनों को जमींदारी से पुरस्कृत किया। क्लाइव को 2,34,000 पौण्ड निजी भेंट के रूप में दिए गए। इसके अलावा बंगाल की समस्त फ्रांसीसी बस्तियां भी अंग्रेजों को दे दी गईं। इस प्रकार प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल अंग्रेजों के अधीन आ गया और फिर कभी स्वतंत्र न हो सका। बंगाल का नया नवाब मीर जाफर अपनी रक्षा तथा पद के लिए पूर्ण रूप से अंग्रेजों पर निर्भर था।

यद्यपि मीर जाफर क्लाइव का कठपुतली शासक था किन्तु वह अंग्रेजों की निरन्तर बढ़ती धन की मांग को पूरा न कर सका। अतः अंग्रेज किसी अन्य शासक की तलाश करने लगे। इस उपयुक्त अवसर की तलाश मीर जाफर का दामाद मीर कासिम भी कर रहा था। अतः शीघ्र ही दोनों (अंग्रेज और मीर कासिम) की तलाश पूरी हो गई। 27 सितम्बर, 1760 को मीर कासिम तथा कलकत्ता काउन्सिल के मध्य एक संधि पर हस्ताक्षर हुए।

इस संधि में निम्नलिखित प्रावधान थे—

1. मीर कासिम ने कम्पनी को बर्दमान, मिदनापुर तथा चटगांव के जिले देना स्वीकार किया।
2. सिल्लहट के चूने के व्यापार में कम्पनी का आधा हिस्सा तय किया गया।
3. मीर कासिम कम्पनी को दक्षिण के अभियान हेतु 5 लाख रुपया देगा।
4. मीर कासिम कम्पनी के मित्रों को अपना मित्र तथा शत्रुओं को अपना शत्रु मानेगा।
5. कम्पनी नवाब के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
6. कम्पनी नवाब को सैनिक सहायता प्रदान करेगी।

14 अक्टूबर, 1760 को इस संधि को कार्यान्वित करवाने हेतु बेन सिटार्ट तथा कोलॉड मुर्शिदाबाद पहुंचे। मीर जाफर ने अंग्रेजों के भय के कारण मीर कासिम के पक्ष में गद्दी छोड़ दी। मीर जाफर कलकत्ता में रहने लगा, जहां उसे 15,000 रुपये मासिक पेंशन प्राप्त होती थी। नवाब बनने के बाद मीर कासिम अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंघेर ले गया। वह मुर्शिदाबाद को षड्यन्त्रों का केन्द्र समझता था तथा कलकत्ता से दूर रहकर अंग्रेजों के हस्तक्षेप से दूर रहना चाहता था। उसने अपनी सेना का गठन यूरोपीय पद्धति पर करने का निश्चय किया। उसने मुंघेर में तोपों तथा तोड़ेदार बन्दूकों के बनाने की भी व्यवस्था की।

बक्सर का युद्ध

मीर कासिम को नवाब बनाते समय कम्पनी ने यह सोचा था कि मीर कासिम भी कठपुतली शासक साबित होगा। किन्तु मीर कासिम 1760 की संधि तक ही कठपुतली शासक साबित हुआ। कम्पनी और मीर कासिम के मध्य झगड़ा आन्तरिक व्यापार पर लगे करों को लेकर आरंभ हुआ। इसके बाद दोनों के मध्य झगड़े बढ़ते ही गए। इन झगड़ों का परिणाम 1764 में बक्सर के युद्ध के रूप में सामने आया। अवध में मीरकासिम ने मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध एक संघ बनाया जिसमें अंग्रेजों को बंगाल से बाहर निकालने की योजना बनाई गई। तत्पश्चात् तीनों की संयुक्त सेनाओं ने पटना की ओर प्रस्थान किया। इस संयुक्त सेना में लगभग 40 से 50 हजार के बीच सैनिक थे। इस सेना का सामना करने के लिए अंग्रेज सेना भी मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में निकली। अंग्रेज सेना में 7027 सैनिक थे। दोनों सेनायें बिहार में बक्सर नामक स्थान पर आमने सामने हुईं। 22 अक्टूबर 1764 को दोनों पक्षों में युद्ध शुरू हुआ। युद्ध घमासान हुआ लगभग 3 घण्टे में युद्ध का निर्णय हो गया। बाजी अंग्रेजों

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

भारतीय गवर्नर जनरल

लार्ड क्लाइव

- सन 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद क्लाइव को बंगाल का गवर्नर बनाया गया इसने बक्सर के युद्ध के बाद बंगाल में द्वैध शासन लागू किया।

वारेन हेस्टिंग्स (1772 – 1785)

- यह बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बना।
- इसने 1772 में राजस्व बोर्ड का गठन किया एवं कलेक्टर का पद का सृजन किया।
- इसने 1774 में कलकत्ता में सुप्रीमकोर्ट की स्थापना की।
- इसने प्रत्येक जिले में एक दीवानी और फौजदारी न्यायालय की स्थापना की।
- इसके शासनकाल में 1784 में सर विलियम जोन्स द्वारा द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना समाज सुधार के लिए की गई।
- इसी के शासनकाल में चार्ल्स विल्किन्स ने गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786–1793 ई.)

- 1791 ई. ने जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना की।
- इसने कार्नवालिस कोड के माध्यम से न्याय सम्बन्धी कार्यों का राजस्व मामलों से पृथक्करण किया।
- कार्नवालिस को भारत में सिविल सेवा परीक्षा का जन्मदाता माना जाता है। सिविल सेवा परीक्षा प्रारम्भ में इंग्लैण्ड में होती थी। प्रथम भारतीय आई ए एस सत्येन्द्रनाथ टैगोर 1863 ई. में बने। प्रारम्भ में इस परीक्षा की अधिकतम आयु 23 वर्ष थी, जिसे लिटन ने घटाकर 19 वर्ष कर दिया था।
- कार्नवालिस ने स्थायी बन्दोबस्त लागू की। जिसके अन्तर्गत जमींदारों को भूमि का स्वामी मान लिया गया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत जमींदारों को भू राजस्व का 10/11 भाग कम्पनी को तथा 1/11 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था।
- कार्नवालिस दोबारा 1805 ई. में भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया। इसी दौरान 1805 ई. में उसकी गाजीपुर में मृत्यु हो गयी। गाजीपुर उत्तरप्रदेश में ही उसकी समाधि है।

सर जॉन शोर (1793 – 1798)

- इसने देशी राज्यों के प्रति अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया।

लार्ड वेलेजली (1798 – 1805)

- इसे मार्किविस ऑफ वेलेजली के नाम से जाना जाता है।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

लार्ड ऑकलैंड (1836 – 1842)

- इसने अफगानों के साथ युद्ध किया जिसे प्रथम आंग्ल अफगान युद्ध के नाम से जाना जाता है।
- इसने शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित सड़क-ए-आजम का नाम बदलकर ग्रान्ड ट्रंक रोड रख दिया।

लार्ड एलनबरो (1842 – 1844)

- इसके शासनकाल में दास प्रथा का अन्त हुआ।
- इसने चार्ल्स नेपियर के सहयोग से सिंध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया।

लार्ड डलहौजी (1846 – 1856)

- इसने राज्य हड़प की नीति अपनाई जिसके अनुसार रिसायतों को ब्रिटिश शासन की अनुमति के बिना गोद लेने का अधिकार नहीं था। इस नीति के द्वारा डलहौजी ने 1848 में सतारा, 1849 में जैतपुर व संभलपुर, 1852 में उदयपुर, 1853 में झांसी तथा 1854 में नागपुर को अंग्रेजी राज्य में मिला दिया। 1856 में अवध के नबाव को कुशासन के आरोप में सत्ता से हटाकर अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- इसने बंगाल का प्रशासन देखने के लिए एक लेफ्टिनेंट गवर्नर की नियुक्ति की।

लखनऊ के अन्तिम नबाब – वाजिद अली शाह

वाजिद अली शाह लखनऊ के अन्तिम नबाब थे। वे कवि, गायक, कला के कद्रदान और लखनऊ से मोहब्बत करने वाले थे। उन पर अंग्रेजों द्वारा यह आरोप लगाया कि "वे केवल अनपी निजी इन्द्रियों को सुखी करने में तल्लीन हैं, उनका सार्वजनिक मामलों में कोई रुझान नहीं है और उच्च पद के कर्तव्यों और ज़िम्मेदारियों से उन्हें कोई लेना देना नहीं है।"

वाजिद अली शाह के इस वर्णन को अवध का अंग्रेजों द्वारा विलय की दलील के तौर पर इस्तेमाल किया गया। यदि वाजिद अली शाह के खिलाफ़ बद-इंतजामी का इल्ज़ाम सच भी था, तो इसके लिए अंग्रेज़ भी नवाब के बराबर ज़िम्मेदार थे। 1780 के दशक के बाद से अवध के प्रशासन और वित्त का नियंत्रण उनके पास अधिक था। साथ ही, अंग्रेजों द्वारा नवाब से लगातार धन की माँग से अवध काफ़ी निर्धन हो चुका था। अंततः अंग्रेजों को 1801 की संधि की धारा लागू करने का बहाना मिल ही गया और 1856 में गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौज़ी ने अवध का अधिग्रहण कर लिया, वाजिद अली शाह को कलकत्ता में मटियाबुर्ज में बंदी बना दिया गया।

- इसके समय में 1854 में कुछ शिक्षा से संबंधित चार्ल्स बुड का डिस्पेच प्रकाशित हुआ। जिसके माध्यम से प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यापक योजना बनाई गई।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

- इसके समय में 1875 में सर सैयद अहमद खां के द्वारा अलीगढ़ में मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की गई।
- इसके समय में प्रिंस ऑफ वेल्स (किंग एडवर्ड सप्तम) भारत आएँ।

लार्ड लिटन (1876 – 1880)

- यह एक महान लेखक था। जो ओवन मैरिडिथ के नाम से साहित्य जगत में जाना जाता था।
- इसके समय में मद्रास, बम्बई मैसूर, हैदराबाद, पंजाब और मध्यभारत में भारी अकाल पड़ गया। अकाल के कारणों की जांच के लिए इसने रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में अकाल आयोग की स्थापना की।
- इसके समय में 1 जनवरी 1877 को दिल्ली में दरबार का आयोजन किया गया जिसमें ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित किया गया।
- इसके शासनकाल में 1878 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट आया। जिसने भारतीय भाषा में समाचार पत्रों को प्रतिबंधित कर दिया। इस अधिनियम को भारतीय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोटने वाले अधिनियम के नाम से भी जाना जाता है।
- इसके शासनकाल में 1878 में भारतीय शस्त्र अधिनियम पारित हुआ जिसके अनुसार किसी भारतीय के लिए बिना लाइसेंस शस्त्र रखना एवं उसका व्यापार करना दण्डनीय अपराध बना दिया गया।
- इसके शासनकाल में 1879 में वैधानिक नागरिक सेवा आरंभ की गई। जिसमें यह प्राविधान किया गया कि अब तक जिन पदों पर नियमित नागरिक सेवाओं के सदस्य काम करते थे। उन पर वायसराय द्वारा स्वीकृत व्यक्ति ही नियुक्त किये जायेंगे।
- इसने अलीगढ़ में एक एंग्लो मुस्लिम प्राच्य महाविद्यालय की स्थापना की।

लार्ड रिपन (1880 – 1884)

- इसे फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने भारत के उद्धारक के संज्ञा दी है।
- इसके शासनकाल को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है।
- इसके शासनकाल में भारत में 1881 में नियमित जनगणना आरंभ हुई।
- इसके शासनकाल में भारत में 1881 प्रथम फैक्ट्री अधिनियम आया।
- इसके शासनकाल में 1882 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट समाप्त कर दिया गया।
- इसके शासनकाल में शिक्षा सुधार के लिए 1882 में विलियम हंटर के नेतृत्व में हंटर कमिशन का गठन किया गया।
- इसने भारत में स्थानीय स्वशासन की शुरुआत की।
- इसके शासनकाल में इल्बर्ट बिल विवाद 1884 में उत्पन्न हुआ। इल्बर्ट भारत सरकार का विधि सदस्य था। इसने फौजदारी दण्ड व्यवस्था में उच्च भेदभाव जिसके अनुसार भारतीय न्यायधीशों को यूरोपीय लोगों के मुकदमों की सुनवाई का अधिकार नहीं था को समाप्त करने का प्रयत्न किया। इसके परिणाम स्वरूप ब्रिटेन में भीषण विवाद हुआ और लार्ड रिपन को त्याग पत्र देना पड़ा।

लार्ड डफरिन (1884 – 1888)

- इसके शासनकाल में 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

- 1890 में एन एम लोखण्डे ने बम्बई मिल हैड्स एसोसिएशन नाम से भारत का पहला मजदूर संघ स्थापित किया।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1918 में व्ही पी वाडिया द्वारा मद्रास मजदूर संघ की स्थापना की गई। यह पूर्ण रूप से संगठित भारत का प्रथम मजदूर संगठन था।
- 1918 में ही महात्मा गांधी द्वारा अहमदाबाद में टैक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की जो उस समय का सबसे बड़ा ट्रेड यूनियन था। इसी दौरान गांधी जी ने ट्रस्टीशिप का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार पूंजीपति मजदूरों के हितों की रक्षा करने वाला ट्रस्टी होता है।
- 1889 में पेरिस में द्वितीय इंटरनेशनल नामक अंतराष्ट्रीय श्रमिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें रूस के नेता जॉर्जी प्लेखनॉव के साथ दादा भाई नौरोजी ने भागीदारी की।
- सन 1941 में एम एन रॉय ने इंडियन फ़ेडरेशन ऑफ़ लेबर पार्टी की स्थापना की।
- 31 अक्टूबर 1920 में नारायण मल्हार जोशी और लाला लाजपत राय ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की जिसे एटक के नाम से भी जाना जाता है।
- 1929 में एटक का विभाजन हो गया और व्ही व्ही गिरी की अध्यक्षता में ट्रेड यूनियन फ़ेडरेशन की स्थापना की गई।
- 1931 में एटक का दूसरा विभाजन हुआ जब साम्यवादियों ने एटक को छोड़ रेड ट्रेड यूनियन बनाई।

ब्रिटिश काल में प्रेस का विकास

भारत में प्रिंटिंग प्रेस का आरंभ पुर्तगालियों द्वारा सन 1557 ई. में तब किया गया। जब गोवा के कुछ पादरियों ने मिलकर भारत के प्रथम पुस्तक को प्रकाशित किया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना पहला प्रेस 1684 में मुम्बई में स्थापित किया। भारत में आधुनिक प्रेस का आरंभ 1766 में विलियम बोल्टस के प्रयासों से हुआ। जेम्स आगस्तस हिककी को भारत में पत्रकारिता का जनक माना जाता है। उन्होंने 1780 ई. में बंगाल गजट के नाम से अपने प्रथम समाचार पत्र का प्रकाशन किया, परन्तु शीघ्र ही यह बन्द हो गया। भारत का पहला समाचार पत्र बंगाल गजट सन 1816 ई. में गंगाधर भट्टाचार्य के द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया। यह साप्ताहिक पत्र था। राजाराम मोहनराय को राष्ट्रीय पत्रकारिता का जनक कहा जाता है इन्होंने संवाद कौमुदी, मिरात-उल-अखबार तथा ब्रम्हानिकल मैग्जीन नामक समाचार पत्रों प्रकाशित किया। भारत के पत्रकारिता के क्षेत्र में जेम्स सिल्क बारकिंघम का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने प्रेस को जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इन्होंने 1818 ई. में कलकत्ता जनरल का प्रकाशन किया और सरकार को परेशानी में डाल दिया।

प्रमुख समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ

समाचार पत्र	संस्थापक	भाषा	स्थान
कलकत्ता जर्नल	जेम्स बार्किंघम	अंग्रेजी (1818)	कलकत्ता
संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय	बांग्ला (1821)	कलकत्ता
मिरात-उल-अखबार	राजा राममोहन राय	फारसी (1822)	कलकत्ता
रफ्त गोफ्तार	दादा भाई नौरोजी	गुजराती (1831)	बम्बई
हिन्दु	वीर राघवाचारी	अंग्रेजी (1878)	मद्रास

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
बहु विवाह	ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

भारत में कम्पनी की नीतियों का दुष्प्रचार रोकने के लिए लॉर्ड वेलेजली द्वारा समाचार पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम 1799 में बनाया गया। 1818 में लॉर्ड हेस्टिंग ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया। 1823 में जॉन एडम्स को बंगाल का कार्यवाहक गवर्नर जनरल बनाया गया। उसने देशी समाचार पत्रों को प्रतिबंधित करने के लिए अनुज्ञप्ति नियम 1823 में बनाया। इस नियम के अंतर्गत किसी भी प्रकाशक को प्रेस की स्थापना करने से पहले कम्पनी से अनुमति लेनी होती थी।

चार्ल्स मेटकॉफ ने लॉर्ड मैकाले की सहायता से 1835 में इस नियम को रद्द कर दिया तथा लिबरेशन ऑफ इंडियन प्रेस एक्ट नामक नया अधिनियम बनाया इसके तहत प्रकाशकों को प्रेस की स्थापना के लिए केवल कम्पनी को सूचना देनी होती थी। चार्ल्स मेटकॉफ के भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहा जाता है। 1878 में लॉर्ड लिग्टन द्वारा भारतीय प्रेस के खिलाफ वर्नाकुलर प्रेस एक्ट निर्मित किया। जिसके अनुसार दण्ड नायकों (जिला मजिस्ट्रेटों) को यह अधिकार दिया गया कि वे समाचार पत्रों से एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करवायें। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को भारतीय समाचार पत्रों का गला घोटने वाला अधिनियम कहा गया। इस अधिनियम को भारी विरोध के कारण 1828 में लॉर्ड रिपन द्वारा निरस्त कर दिया गया।

भारत में शिक्षा का विकास

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य सर्वप्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग के द्वारा किया गया। उन्होंने 1771 ई. में कलकत्ता में अरबी एवं फारसी पढ़ाने के लिए कलकत्ता मदरसा की स्थापना की। इनके सहयोगी सर विलियम जॉन्स ने 1778 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। जहां प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का अध्ययन आरंभ किया गया। सन 1791 में जोनाथन डंकन नामक अंग्रेज विद्वान ने बनारस में संस्कृत कॉलेज भेजा। ब्रिटिश सरकार द्वारा चार्टर एक्ट 1813 के माध्यम से शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु 1 लाख रुपये खर्च किये जाने एवं भारत ने ईसाई मिशनरियों को आने की अनुमति प्रदान की गई। ईसाई मिशनरियों ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन 1817 में पश्चिमी पैटर्न पर विज्ञान एवं सामाजिक विषयों के अध्ययन हेतु राजा राममोहन राय एवं डेविड हेयर ने मिलकर हिन्दु कॉलेज की स्थापना कलकत्ता में की। ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा का अधोमुखी निरस्यन्दन का सिद्धांत लागू किया। यह सिद्धांत ऑकलैण्ड द्वारा आरंभ किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक भारतीय को शिक्षित किया जाना संभव नहीं है ऐसा मानकर यह तय किया गया कि केवल उच्च वर्गों के लोगों को शिक्षित किया जायें जिनके द्वारा शिक्षा निम्न वर्गों तक स्वतः ही पहुंच जायेगी। सन 1854 की वुड्स डिस्पेच के बाद इस नीति को त्याग दिया गया। 1835 में लॉर्ड विलियम वेंटिक ने मैकाले की शिक्षा पद्धति को लागू किया। इसके अनुसार आंग्ल भाषा में शिक्षा के प्रचार प्रसार की रणनीति तैयार की गई।

19 जुलाई 1854 में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के प्रधान सदस्य सर चार्ल्स वुड ने भारत की भावी शिक्षा के लिए एक योजना प्रस्तुत की। जिसे वुड्स डिस्पेच के नाम से जाना जाता है। इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकाटा भी कहते हैं। इस योजना के अनुसार भारत में अंग्रेजी भाषा के साथ साथ देशी भाषाओं के विकास पर भी जोर दिया गया। देशी भाषायी पाठशालाओं के साथ साथ जिले में एंग्लो वर्नाकुलर हाइस्कूल और कॉलेज खोले गये। कलकत्ता बम्बई और मद्रास में विश्व विद्यालयों की स्थापना की गई लोक शिक्षा विभाग का गठन किया गया।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

4. एका आन्दोलन (1920–1921) – यह आंदोलन अवध के हरदोई बहराई और सीतापुर जिले में चलाया गया। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य शासन द्वारा निर्धारित 50 प्रतिशत लगान को कम करवाना था। इस आंदोलन के प्रमुख नेता मदारी पासी थे। यह आंदोलन 1922 में कुचल दिया गया।

5. बारदोली सत्याग्रह (1928) – बारदोली गुजरात का एक जिला है जहां स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सबसे संगठित कृषक आंदोलन चलाया गया। यह आंदोलन लगान की अदायगी न करने से संबंधित था। वर्ष 1927 में गुजरात के कपास कृषकों को कपास के मूल्य में गिरावट आने के कारण काफी नुकसान का सामना करना पड़ा इसके बावजूद शासन ने भू राजस्व की दर को 30 प्रतिशत बढ़ा दिया जिसके खिलाफ किसान एक जूट हो गये। इस आंदोलन का नेतृत्व सरदार बल्लभ भाई पटेल एवं कल्याण जी तथा दयाल जी ने किया। आंदोलन की गंभीरता को देखते हुए तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड इरविन ने बम्बई के गवर्नर बिल्सन को मामले का निपटारा करने का आदेश दिया। फलस्वरूप लगान की दर घटाकर 6.03 प्रतिशत कर दिया गया। यह पहला आंदोलन था, जिसमें गुजरात की मीठा बेन, भक्ति बा, मनीबेन पटेल तथा शारदाबेन जैसी महिलाओं ने भागीदारी की। इन महिलाओं की ओर से गांधी जी द्वारा बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी गई। इस आंदोलन का सजीव चित्रण गांधी जी के सहायक महादेव देसाई ने अपनी पुस्तक स्टडी ऑफ बारदोली में किया है।

6. तेभागा आंदोलन (1946) – यह आंदोलन त्रिपुरा के हसनाबाद जो कि नोआखली के समीप है से 1946 में आरंभ हुआ। इस आंदोलन में लगभग 50 लाख किसान शामिल हुए। इसका नेतृत्व कम्पाराम तथा भवन सिंह ने किया। इस आंदोलन को तेभागा इसलिए कहा जाता है क्यों कि यहां के किसानों ने यह घोषणा की कि वे फसल का दो तिहाई भाग स्वयं लेंगे तथा एक तिहाई हिस्सा जमींदारों को देंगे।

अखिल भारतीय किसान सभा

इसका गठन 1936 में लखनऊ में किया गया। यह सभा प्रांतीय किसान सभाओं को मिलाकर बनाई गई 1936 में ही इसका पहला अधिवेशन लखनऊ में हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी सहजानंद द्वारा की गई। 1 सितम्बर 1936 को किसान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

3. भारतीय किसान भी अंग्रेजों के लगान और रैयतवाड़ी या महलवाड़ी कु-व्यवस्थाओं के कारण क्रोधित थे। किसानों की दशा बद से बदतर हो गयी थी।

1857 के विद्रोह के सामाजिक कारण—

1. अंग्रेजों ने जाति नियमों की उपेक्षा की। विलियम बैंटिक ने सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय रुढ़िवादी आहत थे।
2. अंग्रेजों द्वारा चलाये गए रेल, डाकतार आदि को भारतीयों ने भ्रमवश गलत अर्थ में लिया। उन्होंने सोचा कि ये साधन ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हैं।
3. अंग्रेजों ने पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं साहित्य का अधिकाधिक प्रचार किया और भारतीय संस्कृति, भाषा-साहित्य को नीचा दिखाया, इससे भी लोग क्षुब्ध थे।
4. भारतीय रजवाड़ों को अपने अंकुश में रखा। रह-रह कर रजवाड़ों की बेज्जती भी करते थे।

1857 के विद्रोह के धार्मिक कारण—

1. अंग्रेज हिन्दू धर्म व इस्लाम की खुल कर आलोचना करते थे। इससे हिन्दू-मुस्लिम धर्म के लोगों को ठेस पहुँचती थी।
2. शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से अंग्रेजों ने ईसाई धर्म का जोर-शोर से प्रचार किया ताकि आने वाली भारतीय पीढ़ी का ईसाई धर्म के प्रति रुझान हो। इससे भी भारतीय रुष्ट थे।
3. ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों को सरकारी नौकरी, उच्च पद तथा अनेक सुविधाएँ प्रदान की गयीं। हिन्दू एवं मुस्लिम खुद को अलग-थलग महसूस करने लगे।

1857 के विद्रोह के सैनिक कारण—

1. भारतीय सैनिकों के साथ अंग्रेज भेद-भाव करते थे, चाहे वह प्रोन्नति या नियुक्ति का मामला हो। हिन्दू-मुस्लिम को हेय दृष्टि से देखा जाता था।
2. प्रथम अफगान युद्ध में अंग्रेजों की पराजय से भारत में भारतीय सैनिकों के आत्मबल में वृद्धि हुई। उन्हें अब लगने लगा कि अंग्रेजी शक्ति को भी परास्त किया जा सकता है।
3. मंगल पाण्डे वाली स्टोरी तो आप जानते ही होंगे। वही कारतूस वाला मामला। पर इसको तात्कालिक कारण में डालना ठीक होगा।
4. बंगाल सेना में जो ब्राह्मण, राजपूत जाति के थे, वे भारत देश से बाहर जाना नहीं चाहते थे, उन्हें लगता था कि बाहर जाकर उनका धर्म भ्रष्ट हो जायेगा। पर अंग्रेजों ने ऐलान किया कि सैनिकों को सेवा करने के लिए कहीं भी भेजा सकता है।

1857 के विद्रोह के तात्कालिक कारण—

लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल में सैनिकों को एक ऐसे कारतूस का प्रयोग करना पड़ा, जिसमें गाय और सूअर की चर्बी लगी थी जिसे मुँह से काटना पड़ता था। इससे हिन्दू और मुसलमान सैनिकों में भारी रोष उत्पन्न हो गया।

विद्रोह की असफलता के कारण

1857 ई. में व्यापक पैमाने पर हुए इस विद्रोह में भारतीय सैनिकों की संख्या अंग्रेजों की सैनिकों की संख्या से कहीं अधिक थी। यही कारण रहा कि प्रारम्भ में अनेक स्थानों पर भारतीयों को सफलता प्राप्त हुई। किन्तु अंत में इस विद्रोह का दमन कर दिया गया।

1. **विद्रोह का प्रारम्भ समय से पूर्व होना** — विद्रोह की तिथि 31 मई, 1857 निर्धारित की गयी थी, किन्तु बैरकपुर में सैनिकों ने उत्साह में आकर समय से पूर्व ही विद्रोह कर दिया जिसके कारण भारत में एक साथ विद्रोह नहीं हो सका।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

बैठाने से इंकार कर दिया। अंत में, नाना साहब अपने साथियों के साथ नेपाल की तराइयों में चले गए। नाना साहब की मृत्यु कब कहां व कैसे हुई किसी को भी नहीं पता। परंतु देश की आजादी में उनके त्याग व संघर्ष को हम सदैव याद रखेंगे।

2. तात्या टोपे

1857 की क्रांति के इस महानायक का जन्म 1814 में नासिक में हुआ था। इनके बचपन का नाम रघुनाथ पंत था। जब रघुनाथ छोटे थे उस समय मराठों पर पेशवा बाजीराव द्वितीय का शासन था। रघु के पिता बाजीराव के दरबार में कार्यरत थे। कई बार बालक रघु अपने पिता के साथ दरबार में जाते थे। एक बार बाजीराव बालक की बुद्धिमानी देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बालक को एक टोपी उपहार में दी और उन्होंने उनको तात्या टोपे नाम दिया। नाना साहब तात्या टोपे के मित्र व सलाहकार थे। कानपुर में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहब ने क्रांति की लहर फैलाई। उनको हुई कथित फाँसी के सम्बन्ध में तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने दस्तावेज तथा समकालीन कुछ अंग्रेज लेखक तथा बाद में वीर सावरकर, वरिष्ठ इतिहासकार आर. सी. मजूमदार व सुरेन्द्र नाथ सेन ने अपने ग्रंथों में तात्या टोपे को 7 अप्रैल, 1859 में पाड़ौन (नवरवर) राज्य के जंगल से, उस राज्य के राजा मानसिंह द्वारा विश्वासघात कर पकड़वाना बताया है। 18 अप्रैल, 1859 को शिवपुरी में उनको फाँसी देने की बात भी लिखी गई है।

3. बाबू कुँवर सिंह

बिहार में स्वतंत्रता संग्राम की तैयारियाँ वर्ष 1855 से ही प्रारम्भ हो गई थी। उस समय वहाबी मुसलमानों की गतिविधियों का केन्द्र बिहार ही था। नाना साहब पेशवा का संदेश मिलते ही पूरे बिहार में गुप्त बैठकों का दौर शुरू हो गया। पटना में किताबें बेचने वाले पीर अली क्रांतिकारी संगठन के मुखिया थे। सन् 1857 की 10 मई को मेरठ के भारतीय सैनिकों की स्वतंत्रता का उद्घोष बिहार में भी सुनाई दिया। पटना का कमिश्नर टेलर बड़ा धूर्त था। मेरठ की क्रांति का समाचार मिलते ही उसने पटना में जासूसों का जाल बिछा दिया। सैनिक जानते थे कि अंग्रेजों से लड़ने के लिये कोई योग्य नेता होना जरूरी है और जगदीशपुर के 80 साल के नवयुवक यौद्धा कुँवर सिंह ही सक्षम नेतृत्व दे सकते हैं। 23 अप्रैल को विजय श्री के साथ कुँवर सिंह ने जगदीशपुर के राजप्रासाद में प्रवेश किया। लेकिन गोली का विष पूरे शरीर में फैल ही गया और 3 दिन बाद ही 26 अप्रैल को उन्होंने प्राणोत्सर्ग कर दिया।

4. बहादुर शाह जफ़र

बहादुर शाह जफ़र का जन्म 24 अक्टूबर, 1775 कोदिल्ली में हुआ था। इनकी माता का नाम लाल बाई व पिता का नाम अकबर शाह (द्वितीय) था। 1837 को ये सिंहासन पर बैठे। ये मुगलों के अंतिम सम्राट थे। जब ये गद्दी पर बैठे उस समय भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का राज था। इनको शायरी बेहद पसंद थी। उन्होंने एक सेना संगठित की व इस सेना का खुद ने नेतृत्व किया। बहादुर शाह ने आदेश दिया कि हिन्दुस्तान के हिन्दुओं व मुसलमानों उठो खुदा ने जितनी बरकतें इंसान को दी हैं उनमें सबसे कीमती बरकत (वरदान) आजादी है। हम दुश्मन का नाश कर डालेंगे और अपने धर्म तथा देश को खतरे से बचा लेंगे। बाद में ब्रितानी सेना का विरोध करने के कारण उनको बंदी बनाकर बर्मा भेज दिया गया। उनके साथ उनके दोनों बेटों को भी कारावास में डाल दिया गया। वहां इनके दोनों बेटों को मार दिया गया व रंगून में 7 नवम्बर 1862 को इनकी मृत्यु हो गई।

5. मंगल पाण्डेय

मंगल पांडे 1857 की क्रांति के महानायक थे। ये वीर पुरुष आजादी के लिये हंसते-हंसते फाँसी पर लटक गये। इनका जन्म जुलाई 1827 में उत्तर प्रदेश (बालिया) जिले के सरयूपारी (कान्यकुब्ज) ब्राह्मण परिवार में हुआ। बड़े होकर वे कलकत्ता के बैरकपुर की नेटिव इन्फेन्ट्री में सिपाही के पद पर नियुक्त हुए। वहां से 1849 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में भर्ती हुए। उस समय इनकी आयु 22 साल की थी। मंगल पांडे शुरू से ही स्वतंत्रता प्रिय व धर्मपरायण व्यक्ति थे। वे इनकी रक्षा के लिये अपनी जान भी देने के लिये तैयार रहते थे।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सरकार का एक तहसीलदार नियुक्त कर दिया। यह व्यवस्था इसलिए की गई, क्योंकि रियासत के उत्तराधिकारी सरजू प्रसाद सिंह की अवस्था उस समय केवल पाँच वर्ष की थी। सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के समय बालक सरजू प्रसाद सिंह सत्रह वर्ष के तरुण हो चुके थे। वह क्रांतिकारी स्वभाव के किशोर थे और ब्रितानियों से उन्हें घृणा थी। तरुण सरजू प्रसाद सिंह ने आस-पास के जागीरदारों को मिलाकर तीन हजार प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना खड़ी कर ली। इसके पश्चात् एक और विशाल सेना जबलपुर से ही कैप्टेन ऊले के नेतृत्व में विद्रोहियों का दमन करने के लिए भेजी गई। इस सेना का सामना सरजूप्रसाद सिंह के सहयोगी ठाकुर देवी सिंह ने किया। वे पराजित होकर गिरफ्तार हो गए। ब्रितानियों ने अपनी सहायता के लिए रीवा नरेश की सेना बुलवाई। बड़ी मुश्किल से रीवा और कंपनी सरकार की संयुक्त सेना विद्रोह का दमन कर सकी। सरजूप्रसाद सिंह को कई वर्ष बाद ब्रितानी सेना गिरफ्तार कर सकी।

10. सआदत खाँ

सआदत खाँ शरीर और मन दोनों से ही बलिष्ठ थे। वह देखने में भी निहायत खूबसूरत थे। उनके पूर्वज जोधपूर और दिल्ली के बीच के क्षेत्र मेवात के निवासी थे। आजीविका की खोज में सआदत खाँ इंदौर राज्य में जा पहुँचे। उस समय इंदौर में तुकोजीराव होलकर शासक थे। सआदत खाँ की योग्यता से प्रभावित होकर उन्होंने उन्हें अपने तोपखाने का प्रमुख तोपची नियुक्त कर दिया।

सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम छिड़ने पर सआदत खाँ की देशभक्ति ने जोर मारा वह अपने मादरें-वतन को फ़िरंगियों से आज़ाद करने के लिए उतावला हो उठे। सआदत खाँ की पहली वफ़ादारी अपने होलकर राज्य के प्रति थी। अपने एक फ़ौजी अधिकारी वंश गोपाल के साथ सआदत खाँ ने महाराज की बातचीत और उनके व्यवहार से उन लोगों को यह समझते देर नहीं लगी कि महाराज की सहानुभूति उन लोगों के साथ है। महाराज तुकोजीराव होलकर से भेंट करने के पश्चात् सआदत खाँ ने सैनिकों को एकत्रित किया और उनसे कहा – तैयार हो जाओ। आगे बढ़ो। ब्रितानियों को मार डालो। यह महाराजा साहब का हुक्म है। अपने साथी की ओजस्वी वाणी सुनकर सेना के वीर हुंकार उठे और वे ब्रिटिश रेजिडेंट कर्नल ड्यूरेण्ड पर हमला करने के लिए तैयार हो गए। अपने दल-बल के साथ सआदत खाँ रेजीडेंसी पर पहुँच गए और उसे घेर लिया। उस समय कर्नल ट्रेवर्स भी अपने महिदपुर कंटीजेंट के साथ इंदौर रेजीडेंसी पर मौजूद था।

कर्नल ड्यूरेण्ड को यह समझते देर नहीं लगी कि सेना ने विद्रोह कर दिया है। वह अपनी कूटनीति और वाक् चाकरी के लिए मशहूर था। रेजीडेंसी के फ़ाटक पर पहुँचकर उसने अपने शब्दजाल में क्रांतिकारियों को फँसाना चाहा। सआदत खाँ इन चाल को भली भाँति जानते थे। उन्होंने कर्नल ड्यूरेण्ड पर गोली चला दी। सआदत खाँ की गोली कर्नल ड्यूरेण्ड के एक कान को उड़ाती हुई और उनके गाल को छिलती हुई निकल गई। कर्नल ड्यूरेण्ड भाग खड़ा हुआ। वह रेजीडेंसी के पिछले दरवाज़े से सपरिवार बाहर निकल गया और छिपता हुआ सीहोर जा पहुँचा। वहाँ ब्रितानी फ़ौज रहती थी। कर्नल ट्रेवर्स भी दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। रेजीडेंसी में जितने ब्रितानी थे, वे सभी भाग खड़े हुए। कोठी पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया। कोठी तथा अन्य बगलें लूटकर उजाड़ दिए गए।

4 जुलाई 1857 की रात को क्रांतिकारियों ने लूट का माल अपने साथ लेकर देवास की ओर बढ़ना प्रारंभ कर दिया। क्रांतिकारियों के पास रेजीडेंसी खज़ाने से लूटे गए नौ लाख रुपये, सभी तोपें, गोला बारूद, हाथी, घोड़े और बैलगाड़ियाँ आदि सामान था। होलकर नरेश की भी नौ तोपें वे अपने साथ ले गए।

उखड़ते-उखड़ते भी ब्रितानियों के पैर जम गए और उन्होंने विद्रोह का दमन कर दिया। इंदौर के क्रांतिकारियों में से वे सआदत खाँ को तो नहीं पकड़ सके, पर कई अन्य क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करके उन्हें निर्मम दंड दिए गए। ब्रितानी अत्याचारियों ने ग्यारह क्रांतिकारियों को गोलियों से भून डाला। इक्कीस सैनिकों तथा कुछ नागरिकों को तोपों के मुँह से बाँधकर उड़ाया गया और दो सौ सत्तर सैनिकों को आजीवन कारावास का दंड दिया गया।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सन् 1865 में मौलवी अहमदुल्ला को बड़ी चालाकी के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और मुकदमा चलाया गया। बहुत लोभ-लालच देकर ही शासन उनके विरुद्ध गवाही देने वालों को तैयार कर सका। इस मुकदमे में सेशन अदालत ने तो मौलवी साहब को प्राणदंड की सजा सुनाई, लेकिन हाईकोर्ट में अपील करने पर वह आजीवन कालेपानी की सजा में परिवर्तित हो गई। मौलवी साहब को कालेपानी की काल कोठरियों में डाल दिया गया।

यद्यपि मौलवी अहमदुल्ला कालेपानी की काल कोठरी में बंद थे, लेकिन वे वहाँ से भी भारत में चलने वाले वहाबी आंदोलन को निर्देशित करते रहे। वे सीमा पार के गाँव सिताना में मुजाहिदीनों की फौज को भी निर्देश पर बंगाल के चीफ जस्टिस पेस्टन नामैन की हत्या अबदुल्ला नाम के एक वहाबी ने उस समय कर दी, जब वे सीढियों से नीचे उतर रहे थे। इतना ही नहीं, भारत के वाइसराय लॉर्ड मेयो जब सरकारी दौरे पर अंडमान गए तो मौलवी अहमदुल्ला की योजना के अनुसार ही 8 फरवरी, 1872 को एक वहाबी पठान शेर अली ने लॉर्ड मेयो की उस समय हत्या कर दी, जब वे मोटर बोट पर चढ़ रहे थे। मौलवी अहमदुल्ला ने पूरे पच्चीस वर्ष तक ब्रितानियों के विरुद्ध संघर्ष का संचालन किया। स्वाधीन भारत उस महान देशभक्त का ऋणी है।

13. कमांडर गुरेस राम

3 जून की रात नीमच सैनिक छावनी में भी भारतीय सैनिकों ने शस्त्र उठा लिए। रात 11 बजे 7वीं नेटिव इन्फेण्ट्री के जवानों ने तोप से दो गोले दागे। यह स्वातंत्र्य सैनिकों के लिए संघर्ष शुरू करने का संकेत था। गोलों की आवाज़ आते ही छावनी को घेर लिया गया तथा आग लगा दी गई। नीमच किले की रक्षा के लिए तैनात सैनिक टुकड़ी भी स्वातंत्र्य-सैनिकों के साथ हो गई। अंग्रेज सैनिक अधिकारियों ने भागने में ही अपनी कुशल समझी। सरकारी खज़ाने पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया।

आक्रमणकारी फिरंगियों के विरुद्ध सामान्य जनता तथा भारतीय सैनिकों में काफी गुस्सा था। इसके बावजूद क्रांतिकारियों ने हिंदू-संस्कृति की परंपरा निभाते हुए न तो व्यर्थ हत्याकांड किए, नहीं अंग्रेज महिलाओं व बच्चों को परेशान किया। नसीराबाद से भागे अंग्रेज सैनिक अधिकारियों के परिवारों को सुरक्षित रूप से ब्यावर पहुँचाने में भारतीय सैनिकों व जनता ने पूरी सहायता की। इस तरह नीमच से निकले अंग्रेज महिलाओं व बच्चों को डूंगला गाँव के एक किसान रूंगाराम ने शरण प्रदान की और उनके भोजन आदि की व्यवस्था की। ऐसे ही भागे दो अंग्रेज डाक्टरों को केसून्दा गाँव के लोगों ने शरण दी। इसके उलट जब स्वातंत्र्य सैनिकों की हार होलने लगी तो ब्रितानियों ने उन पर तथा सामान्य जनता पर भीषण और बर्बर अत्याचार किए।

नीमच के क्रांतिकारियों ने सूबेदार गुरेसराम को अपना कमांडर तय किया। सुदेरी सिंह को ब्रिगेडियर तथा दोस्त मोहम्मद को ब्रिगेड का मेजर तय किया। इनके नेतृत्व में स्वातंत्र्य सैनिकों ने देवली को ओर कूच किया। रास्ते में चित्तौड़, हम्मीरगढ़ तथा बनेड़ा पड़ते थे। स्वातंत्र्य सेना ने तीनों स्थानों पर मौजूद अंग्रेज सेना को मार भगाया तथा शाहपुरा पहुँचे। शाहपुरा के महाराज ने क्रांतिकारियों का खुले दिल से स्वागत किया। दो दिन तक उनकी आवभगत करने के बाद अस्त्र-शस्त्र व धन देकर शाहपुरा नरेश ने क्रांतिकारियों को विदा किया। इसके बाद सैनिक निम्बाहेड़ा पहुँचे, जहाँ की जनता तथा जागीरदारों ने भी उनकी दिल खोलकर आवभगत की।

14. रिचर्ड विलियम्स

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ भारत की जनता ने पग-पग पर क्रांतिकारियों का साथ दिया, वहीं कुछ ब्रितानियों ने भी इस महासमर में भारत की स्वतंत्रता के लिए शस्त्र उठाकर स्वतंत्रता सैनानियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई लड़ी। इनमें से एक थे रिचर्ड विलियम्स। ब्रिटेन में पैदा हुए रिचर्ड विलियम्स ब्रिटिश सिपाही के रूप में भारत आए। सन 1857 के स्वातंत्र्य समर के समय इनकी नियुक्ति मेरठ के रिसाले (घुड़सवार टुकड़ी) में थी। 10 मई 1857 को मेरठ की छावनी में क्रांति की ज्वाला धधक उठी। रिसाले के सैनिकों को क्रांतिकारियों पर गोली चलाने का हुक्म दिया गया, लेकिन रिचर्ड विलियम्स ने इस आदेश की अवहेलना करते हुए ब्रिटिश अधिकारी एडजुटेंट टकर को गोली मार दी और स्वतंत्रता सैनानियों से जा मिले। विलियम्स ब्रितानियों की साम्राज्यवादी नीति

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

उसे प्यार से "छबीली" कहकर बुलाने लगे। सन् 1842 में उनका विवाह झाँसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ और वे झाँसी की रानी बनीं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया।

सन् 1851 में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। परन्तु चार महीने की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गयी। सन् 1853 में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवम्बर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया।

ब्रितानी राज ने अपनी राज्य हड़प नीति के तहत बालक दामोदर राव के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। हालांकि मुकदमे में बहुत बहस हुई, परन्तु इसे खारिज कर दिया गया। ब्रितानी अधिकारियों ने राज्य का खजाना जब्त कर लिया और उनके पति के कर्ज को रानी के सालाना खर्च में से काटने का फ़रमान जारी कर दिया। इसके परिणामस्वरूप रानी को झाँसी का क़िला छोड़ कर झाँसी के रानीमहल में जाना पड़ा। पर रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और उन्होंने हर हाल में झाँसी राज्य की रक्षा करने का निश्चय किया।

18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रितानी सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रितानी जनरल ह्यूरोज़ ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक ख़तरनाक भी थी।

18. बेगम हज़रत महल

बेगम हज़रत महल जो अवध की बेगम के नाम से भी प्रसिद्ध थीं, अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं। अंग्रेज़ों द्वारा कलकत्ते में अपने शौहर के निर्वासन के बाद उन्होंने लखनऊ पर कब्ज़ा कर लिया और अपनी अवध रियासत की हकूमत को बरकरार रखा। अंग्रेज़ों के कब्ज़े से अपनी रियासत बचाने के लिए उन्होंने अपने बेटे नवाबज़ादे बिरजिस क़दर को अवध के वली (शासक) नियुक्त करने की कोशिश की थी; मगर उनके शासन जल्द ही ख़त्म होने की वजह से उनकी ये कोशिश असफल रह गई। उन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ़ विद्रोह किया। अंततः उन्होंने नेपाल में शरण ली जहाँ उनकी मृत्यु 1879 में हुई।

खंडवा जिले की पंधाना तहसील के बडदा में 1842 में भाऊसिंह के यहाँ एक बालक ने जन्म लिया, जो अन्य बच्चों से दुबला-पतला था। टंट्या की माँ बचपन में उसे अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। भाऊसिंह ने बच्चे के लालन-पालन के लिए दूसरी शादी भी नहीं की। पिता ने टंट्या को लाठी-गोफन व तीर-कमान चलाने का प्रशिक्षण दिया। टंट्या ने धनुर्विद्या में दक्षता हासिल कर ली, लाठी चलाने और गोफन कला में भी महारत प्राप्त कर ली।

टंट्या ने साहुकारों-मालगुजारों से पीड़ित लोगों का ग़िरोह बनाया जो लूटपाट और डाका डालता था। 30 जून, 1876 को हिम्मतसिंह जमींदार के यहाँ धावा बोला गया, हिम्मतसिंह को गोली मार दी गई। टंट्या एक गाँव से दूसरे गाँव घूमता रहा। लोगों के सुख-दुःख में सहयोगी बनने लगा। गरीबों की सहायता करना, गरीब कन्याओं की शादी कराना, निर्धन व असहाय लोगों की मदद करने से 'टंट्या मामा' सबका प्रिय बन गया। वह शोषित-पीड़ित भीलों का रहनुमा बन गया, उसकी पूजा होने लगी। राजा की तरह उसका सम्मान होने लगा। सेवा और परोपकार की भावना में उसे 'जननायक' बना दिया।

टंट्या को गिरफ्तार करने के लिए इश्तिहार छापे गए, जिसमें इनाम घोषित किया गया।

11 अगस्त, 1896 को सिपाहियों ने निहत्थे टंट्या को दबोच लिया। 19 अक्टूबर, 1889 को टंट्या को फाँसी की सजा सुनाई गयी।

विद्रोह का प्रभाव –

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा राष्ट्रवादी आंदोलन का उद्भव

1878 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट का पारित होना तथा 1882 में इल्वर्ट में बिल जैसी घटनाओं तथा इसी प्रकार सिविल सेवा परीक्षा में आयु सीमा को कम किया जाना जैसी घटनाओं ने भारत के मध्यम वर्ग को झंकझोर कर रख दिया। इसी के परिणामस्वरूप उनमें से कुछ लोग आगे आये तथा कई राजनीतिक संगठनों का गठन किया। उनमें से कुछ संगठन इस प्रकार हैं—

संगठन	संस्थापक	सन	स्थान
लैण्ड होल्डर्स सोसायटी ऑफ इंडिया	द्वारकानाथ टैगोर	1836	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	विलियम एडमस	1839	कलकत्ता
बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	जार्ज थॉमसन	1843	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन	देवेन्द्रनाथ टैगोर	1851	कलकत्ता
इंडियन सोसायटी	आनंद मोहन बोस	1872	कलकत्ता
इंडियन एसोसिएशन	आनंद मोहन बोस तथा सुरेन्द्रनाथ बर्नजी	1876	
इंडियन नेशनल सोसायटी	शिशिर चन्द्र बोस	1883	
इंडियन नेशनल कांग्रेस	आनंद मोहन बोस	1883	कलकत्ता
बाम्बे एसोसिएशन	जगन्नाथ शंकर सेठ	1852	बाम्बे
पूना सार्वजनिक सभा	एस. एच. चिपलूनकर, जे. वी. जोशी, एम. जी. रानाडे		
बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन	फिरोजशाह मेहता	1885	
मद्रास महाजन सभा	जी. अय्यर तथा महावीर राघवाचारी	1885	मद्रास
लंदन इंडिया कमेटी	सी. पी. मुदालियार	1862	लंदन
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	दादा भाई नौरोजी	1866	लंदन
नेशनल इंडियन एसोसिएशन	मेरी कारपेन्टर	1867	लंदन
A.I.N.C.	ए. ओ. होम	1885	मुम्बई
यूनाइटेड इंडियन पेट्रोलियाटिक एसोसिएशन	सर सैय्यद अहमद खान	1888	अलीगढ़
यूपी किसान संघ	मदन मोहन मालवीय, गौरीशंकर	1918	लखनऊ
अवध किसान सभा	पं. नेहरू जी		लखनऊ
इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इन्टक)	एन एम जोशी, लाला लाजपत राय	1920	लखनऊ
स्वराज्यपार्टी	मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास	1923	दिल्ली
आल इंडिया कम्युनिष्ट पार्टी	सत्य भक्त	1924	कानपुर
खुदाई खिदमतगार	खान अब्दुल खान खफार	1929	पेशावर
ऑल इंडिया किसान सभा	स्वामी सहजानंद तथा एन.जी. रंगा	1936	लखनऊ
सर्वेन्ट इंडिया सोसायटी	गोपाल कृष्ण गोखले	1905	मुम्बई

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

समझे जाते थे। सर विलियम वर्ड, जार्जयूले तथा चार्ल्स ब्रेड लाफ अन्य अंग्रेज अधिकारी थे जिन्होंने कांग्रेस की स्थापना में ए.ओ. ह्यूम को सहायता प्रदान की। लार्ड डफरिन भारत के गवर्नर जनरल ने स्वयं कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन (कलकत्ता) में शामिल हुये।

1885–1905 तक कांग्रेस की प्रकृति

कांग्रेस के लिए यह समय उदारवाद के युग के रूप में जाना जाता है। दादा भाई नौरोजी, आनंद मोहन बोस, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, बदरुद्दीन तैयब जी, दिनसा वाचा, फिरोज शाह मेहता इस युग के प्रमुख नेता थे। ये सभी बुद्धिजीवी व्यक्ति थे तथा ये अभिजात्य वर्ग से थे। वे भारत की आम जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। वे विश्वास करते थे कि—

1. हमें ब्रिटिश सरकार का सहयोग करना चाहिए।
2. ब्रिटिश सरकार एक लोकतांत्रिक सरकार हैं तथा हमें लोकतांत्रिक तरीके से अपनी माँग सरकार के सम्मुख रखनी चाहिए।
3. राजनीतिक माँगों को प्रस्तुत करने से पूर्व हमें अपने समाज की समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।
4. हमें अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास रखना चाहिए।

बाल गंगाधर तिलक ने इसे भिक्षावृत्ति की नीति माना।

बाल गंगाधर तिलक

आपका जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में चितपावन ब्राम्हण परिवार में हुआ। बाल गंगाधर तिलक जी एक मराठी पत्रकार थे। केसरी (मराठी), मराठा (इंग्लिश) में आपके द्वारा समाचार पत्रों का प्रकाशन पूना से किया जाता था। कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् आप भारत के प्रमुख नेता के रूप में जाने जाते लगे। आप कांग्रेस की उदारवादी नीतियों के विरोधी थे। 1893 में आपने महाराष्ट्र में गणेश उत्सव तथा 1895 में शिवाजी महोत्सव का चलन प्रारंभ किया। 1897 में आपको गिरफ्तार कर लिया गया तथा आपको 18 महीने के लिए बंदी बना दिया गया। 1908 (1908–1914) में आपको पुनः गिरफ्तार किया गया तथा उन्हें 6 वर्षों की कैद की सजा दी गई। ऐनीबेसेन्ट से प्रभावित होकर 1916 में आपने होमरूल लीग का गठन महाराष्ट्र में किया तथा स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा का नारा दिया। आपने 1890 में कांग्रेस की सदस्यता प्राप्त की। अपने कारावास के दौरान अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहस्य' की रचना की। "द आर्कटिक होम इन द वेदाज" उनकी दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक है। जिसमें उन्होंने यह तर्क दिया कि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव प्रदेश के निवासी थे। आप ही सिर्फ ऐसे कांग्रेस संस्थापक सदस्य थे जो कभी भी कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं बने। आपकी मृत्यु 1 अगस्त 1920 में हुई। (64 वर्ष) उसी दिन महात्मा गाँधी ने अपना असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया।

गोपाल कृष्ण गोखल

महात्मा गाँधी के आध्यात्मिक तथा राजनीतिक गुरु कहा जाता है। आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे तथा "सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसाइटी" के संस्थापक थे। आपका जन्म महाराष्ट्र में 9 मई 1866 में हुआ। आप चित्तपावन ब्राम्हण परिवार में जन्मे थे। 1894 में गोखले जी को कांग्रेस का बाल गंगाधर के साथ संयुक्त सचिव बनाया गया। दोनों एलफिंशटन कॉलेज में प्रवेश लिया। दोनों गणित के प्रोफेसर बने, दोनों दक्कन एजुकेशन सोसायटी के सदस्य बने। दोनों ने साथ-साथ राजनीति की। लेकिन जहां एक ओर बाल गंगाधर तिलक उग्रविचारधारा तथा गोखले की उदारवादी विचाराधारा थी।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों के अग्रणी राजनीतिक दल के रूप में मुस्लिम लीग के गठन को प्रोत्साहित किया। 30 दिसम्बर 1906 को नबाव बकर-उल-मुल्क की अध्यक्षता में ढाका में एक सम्मेलन आयोजित किया। जहाँ नबाव सलीमुल्ला खान ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के नाम से मुस्लिम हितों की रक्षा हेतु एक संगठन बनाने का प्रस्ताव रखा। आगा खान को मुस्लिम लीग का प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया तथा लखनऊ को मुस्लिम लीग का मुख्यालय बनाया गया। मुहम्मद मौलाना अली जौहर ने मुस्लिम लीग का संविधान लिखा। जिसे ग्रीन बुक का नाम दिया गया। 1908 में सैय्यद आमीर अली ने लंदन में मुस्लिम लीग की एक शाखा स्थापित की। मुस्लिम लीग के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे—

1. मुसलमानों में सरकार के प्रति वफादारी की भावना उत्पन्न करना।
2. मुस्लिमों के सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक हितों की रक्षा करना।
3. ब्रिटिश सरकार तथा मुस्लिम समुदाय के मध्य मध्यस्थता का कार्य करना।

मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मंडल 1907 में भारत सचिव गिलवर्ट जॉन इलियट से मिला जिसका उद्देश्य प्रस्तावित संवैधानिक सुधारों के जरिये मुसलमानों को कुछ विशेष सहूलियत प्रदान करवाना था।

स्वराज्य का संकल्प (1906)

लाला लाजपतराय, लोकमान्य तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल गरमपंथी नेता थे जो कि लाल-बाल-पाल के नाम से जाने जाते थे। बाल गंगाधर तिलक ने “स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा” का प्रसिद्ध नारा दिया। इस नारे ने भारतीय शिक्षित युवाओं एवं मध्यम वर्ग को काफी प्रभावित किया। उदारवादी दल के नेता — दादा भाई नौरोजी, गोखले, फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी गरमपंथी विचारधारा के इस विचार से भयभीत थे। वे स्वतंत्रता आंदोलन से अपना नियंत्रण खोना नहीं चाहते थे। इसलिए कांग्रेस के नरमपंथी दल ने स्वराज्य को अपना मुख्य उद्देश्य बनाया। दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वराज्य को अपने परम उद्देश्य के रूप में अपनाया। दादा भाई नौरोजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वराज्य का अर्थ स्पष्ट करते हुये कहा कि डोमीनियन राज्य का दर्जा प्राप्त करने से होगा।

सूरत का अधिवेशन (1907)

कांग्रेस में विभाजन 1907 में कांग्रेस का अधिवेशन सूरत में ताप्ती नदी के किनारे पर आयोजित किया गया। पहले इस अधिवेशन को पूना में आयोजित किया जाना था, लेकिन पूना गरम पंथियों का गढ़ होने के कारण नरम दल भयभीत हो गया और पूना में फैले प्लेग का बहाना बनाकर आयोजन स्थल सूरत घोषित कर दिया गया। रासबिहारी बोस इस अधिवेशन के अध्यक्ष बनाये गये वे कांग्रेस के नरमपंथी दल से संबंध रखते थे। स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन के मुद्दे के प्रसार के मामले में कांग्रेस दो भागों में बंट गयी। एक दल नरम दल तथा दूसरा गरम दल कहलाया।

यह कांग्रेस का पहला औपचारिक विभाजन था। सरकार ने इस अवसर का उपयोग गरमपंथियों की गतिविधियों को दबाने के लिए उन पर नियोजित हमलों के रूप में किया। तिलक को गिरफ्तार करके 6 वर्षों के लिए मॉडले जेल भेज दिया गया। अरविन्दो घोष ने राजनीति छोड़कर पांडिचेरी पहुँच गये इन्होंने लार्ड डिवाइन नामक पुस्तक की रचना की। लाला लाजपतराय ब्रिट्रेन चले गये तथा विपिनचन्द्र पाल ने भी अस्थायी रूप से राजनीति छोड़ दी।

मार्ले मिन्टो सुधार (1909)

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

जहाज भारत पहुंचा। कलकत्ता बंदरगाह (बजबज) में पुलिस के साथ हुई झड़प में 18 लोग मारे गये इस घटना को कामागाटा मारु घटना के नाम से जाना जाता है।

1914 प्रथम विश्व युद्ध (28 जुलाई 1914 – 14 फरवरी 1919)

यह विश्व युद्ध विश्व की दो महान शक्तियों के बीच में किया गया युद्ध था – जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, को मित्र राष्ट्र तथा जर्मनी, आस्ट्रिया, ओटोमन साम्राज्य तथा बुल्गारिया को धुरी राष्ट्र कहा गया। युद्ध का प्रारंभ जुलाई 1914 में आस्ट्रिया ने सर्बिया पर कब्जा कर लिया।

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन 20वीं सदी के प्रथम चतुर्थांश में आरंभ हुआ। क्रांतिकारियों ने हिंसा को स्वतंत्रता आंदोलन का हथियार बनाया। हालांकि क्रांतिकारी आंदोलन के पीछे कई कारक उत्तरदायी थे लेकिन सबसे मुख्य कारण 1905 में बंगाल विभाजन तथा कांग्रेस के उदारपंथी नेताओं के संबंध में प्रतिक्रिया को माना जाता है।

क्रांतिकारी आंदोलन का आरंभ अरबिंदों घोष उनके भाई बरिन घोष तथा भूपेंद्र नाथ दत्ता को माना जाता है। जिन्होंने 1906 में यूगांतर नामक दल का गठन किया क्रांतिकारी आंदोलन से संबंधित कुछ प्रमुख दल एवं उनसे संबंधित घटनाएं इस प्रकार हैं।

1. **अनुशीलन समिति** – अनुशीलन समिति का गठन परमार्थ नाथ मित्र द्वारा 1906 में ढाका में किया गया।
2. **यूगांतर** – का गठन 1906 में बरिन घोष ने कलकत्ता में किया। खुदीराम बोस तथा प्रफुल चाकी ने 30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर के जज किंग्स फोर्ड को बम से उड़ाने की योजना बनाई लेकिन सफल नहीं हुए।
3. **दिल्ली लाहौर षडयंत्र 1912** – दिल्ली षडयंत्र मामला, जिसे दिल्ली-लाहौर षडयंत्र के नाम से भी जाना जाता है, 1912 में भारत के तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या के लिए रचे गए एक षडयंत्र के संदर्भ में प्रयोग होता है, जब ब्रिटिश भारत की राजधानी के कलकत्ता से नई दिल्ली में स्थानांतरित होने के अवसर पर वह दिल्ली पधारे थे। रासबिहारी बोस को इस षडयंत्र का प्रणेता माना जाता है। लॉर्ड हार्डिंग पर 23 दिसम्बर 1912 को चौदनी चौक में एक जुलूस के दौरान एक बम फेंका गया था, जिसमें वह बुरी तरह घायल हो गए थे। इस घटनाक्रम में हार्डिंग के महावत की मृत्यु हो गयी थी। इस अपराध के आरोप में बसन्त कुमार विश्वास, बाल मुकुंद, अवध बिहारी व मास्टर अमीर चंद को फांसी की सजा दे दी गयी, जबकि रासबिहारी बोस गिरफ्तारी से बचते हुए जापान फरार हो गए थे।
4. **इंडिया हाउस** – इंडिया हाउस की स्थापना श्याम जी कृष्ण वर्मा, वी डी सावरकर, वी एन चटर्जी, लाला हर दयाल तथा वी एस अय्यर जैसे नेताओं ने 1905 में लंदन में की। यह भारत के बाहर भारतीय क्रांतिकारियों का प्रमुख संगठन था। इस संगठन द्वारा इंडिया में सोसियोलोजिस्ट नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता था। लार्ड कर्जन द्वारा इंडिया हाउस को प्रतिबंधित कर दिया गया। मदन लाल दिगारा, भीकाजीकामा, इंडिया हाउस के प्रमुख सदस्यों में से एक थे।
5. **गदर पार्टी** – गदर पार्टी की स्थापना 1913 में लाल हरदयाल ने की। गदर पार्टी का उद्देश्य प्रवासी भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का संचार करना तथा भारत में क्रांतिकारियों के लिए धन एकत्र करना था।
6. **इंडो जर्मन षडयंत्र या गदर षडयंत्र** – प्रथम विश्व युद्ध के दौरान (1914 से 1917 के दौरान) जर्मनी अमेरिका तथा आयरलैण्ड के सहयोग से गदर पार्टी के लोगों ने ब्रिटिश सेना में शामिल हिन्दुस्तानी सैनिकों को तोड़ने की योजना बनाई। इसे इंडोजर्मन षडयंत्र कहा जाता है, लेकिन यह योजना सफल नहीं हुई।
7. **बर्लिन समिति** – 1915 में बिरेन्द्र नाथ चटोपाध्याय ने भूपेन्द्र नाथ दत्त तथा लाला हरदयाल के सहयोग से इस समिति का गठन बर्लिन में किया जिसका उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीय क्रांतिकारियों को राष्ट्रहितों के प्रति जागरूक बनाना था।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के कुल 40 क्रान्तिकारियों पर सम्राट के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध छेड़ने, सरकारी खजाना लूटने व मुसाफिरों की हत्या करने का मुकदमा चलाया जिसमें राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खॉ तथा ठाकुर रोशन सिंह को मृत्यु-दण्ड (फाँसी की सजा) सुनायी गयी। इस मुकदमें में 16 अन्य क्रान्तिकारियों को कम से कम ४ वर्ष की सजा से लेकर अधिकतम काला पानी (आजीवन कारावास) तक का दण्ड दिया गया था।

सरदार भगत सिंह (28 सितम्बर 1907– 23 मार्च 1931)

भगत सिंह का जन्म पंजाब के नवांशहर जिले के खटकर कलां गांव के एक सिख परिवार में 27 सितम्बर 1907 को हुआ था। उनकी याद में अब इस जिले का नाम बदल कर शहीद भगत सिंह नगर रख दिया गया है। वे सरदार किशन सिंह और विद्यावती की तीसरी संतान थे। भगत सिंह का परिवार स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था। उनके पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह गदर पार्टी के सदस्य थे।

1916 में लाहौर के डी ए वी विद्यालय में पढ़ते समय युवा भगत सिंह जाने-पहचाने राजनेता जैसे लाला लाजपत राय और रास बिहारी बोस के संपर्क में आये। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को जब जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ तब भगत सिंह सिर्फ 12 वर्ष के थे। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था।

1921 में जब महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन का आह्वान किया तब भगत सिंह ने अपनी पढाई छोड़ आंदोलन में सक्रिय हो गए। वर्ष 1922 में जब महात्मा गांधी ने गोरखपुर के चौरी-चौरा में हुई हिंसा के बाद असहयोग आंदोलन बंद कर दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। अहिंसा में उनका विश्वास कमजोर हो गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र उपयोगी रास्ता है।

अपनी पढाई जारी रखने के लिए भगत सिंह ने लाहौर में लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया। यह विद्यालय क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र था और यहाँ पर वह भगवती चरण वर्मा, सुखदेव और दूसरे क्रांतिकारियों के संपर्क में आये। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पण्डित चन्द्रशेखर आज़ाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

विवाह से बचने के लिए भगत सिंह घर से भाग कर कानपुर चले गए। यहाँ वह गणेश शंकर विद्यार्थी नामक क्रांतिकारी के संपर्क में आये और क्रांति का प्रथम पाठ सीखा। जब उन्हें अपनी दादी माँ की बीमारी की खबर मिली तो भगत सिंह घर लौट आये। उन्होंने अपने गांव से ही अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा। वह लाहौर गए और 'नौजवान भारत सभा' नाम से एक क्रांतिकारी संगठन बनाया। उन्होंने पंजाब में क्रांति का सन्देश फैलाना शुरू किया। वर्ष 1928 में उन्होंने दिल्ली में क्रांतिकारियों की एक बैठक में हिस्सा लिया और चंद्रशेखर आज़ाद के संपर्क में आये। दोनों ने मिलकर हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ का गठन किया। इसका प्रमुख उद्देश्य था सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत में गणतंत्र की स्थापना करना।

फरवरी 1928 में इंग्लैंड से साइमन कमीशन नामक एक आयोग भारत दौरे पर आया। उसके भारत दौरे का मुख्य उद्देश्य था – भारत के लोगों की स्वयत्तता और राजतंत्र में भागेदारी। पर इस आयोग में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था जिसके कारण साइमन कमीशन के विरोध का फैसला किया। लाहौर में साइमन कमीशन के खिलाफ नारेबाजी करते समय लाला लाजपत राय पर क्रूरता पूर्वक लाठी चार्ज किया गया जिससे वह बुरी तरह से घायल हो गए और बाद में उन्होंने दम तोड़ दिया। भगत सिंह ने लाजपत राय की मौत का

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

की तो कांग्रेस के गया अधिवेशन रामप्रसाद बिस्मिल एवं उनके युवा साथियों ने गांधी जी का जमकर विरोध किया। लाला हरदयाल से प्रेरित होकर रामप्रसाद बिस्मिल इलाहाबाद गये तथा एच आर ए का संविधान सचिन्द सन्याल तथा जादू गोपाल मुखर्जी के सहायता से तैयार किया जिसे येलो पेपर के नाम जाना जाता है।

अक्टूबर 1924 में एच आर ए के सदस्यों की बैठक कानपुर में बुलाई गयी। जहां बिस्मिल ने सचिन्द्रनाथ सन्याल तथा जोगेशचंद चटर्जी को संगठन के विस्तार करने की जिम्मेदारी सौंपी। सचिन्द्रनाथ सन्याल तथा जोगेशचन्द्र चटर्जी कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया दोनों वरिष्ठ नेताओं के गिरफ्तार होने के बाद पार्टी की जिम्मेदारी उठाने का पूरा भार बिस्मिल पर आ गया। बिस्मिल ने सरकारी खजाने को ट्रेन में जा रहे को लखनऊ व उन्नाव के बीच छोटे से स्टेशन कांकोरी में लूटने की योजना बनाई। 9 अगस्त 1925 को इसको अंजाम दिया तथा इस घटना को कांकोरी कांड/अगस्त षडयंत्र भी कहा जाता है। 1925 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 19 दिसम्बर 1927 को फांसी दे दी गई। रामप्रसाद बिस्मिल को शव गोरखपुर के घंटाघर में अंतिम दर्शन के लिये रखा गया जहां से इसे अंतिम संस्कार के लिए राप्ती नदी (गोरखपुर) में लाया गया। सरफरोशी के तमन्ना उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है जो 4 भागों में लिखी गई हैं।

चन्द्रशेखर आजाद

आपका जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के भांवरा नामक स्थान पर हुआ। इन्हीं के नाम पर भांवरा का नाम बदलकर चंद्रशेखर आजाद नगर कर दिया गया। इनका पूरा नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। आपने अपना बचपन भांवरा गांव (अलीराजपुर) में बीता जहां उनके पिता अध्यापक थे। 14 वर्ष की उम्र में ही आप क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गये। जिसके कारण आपको गिरफ्तार किया गया। जब उनसे जज ने उनका नाम पूछा तो उन्होंने तुरंत जबाव दिया आजाद तथा पिता का नाम स्वतंत्रता बताया तथा जब जज ने पता पूछा तो उत्तर दिया जेलखाना। जज ने अपने नियंत्रण खो दिया तो पुलिस कर्मी को 15 कोड़े लगाने का आदेश दिया। वे प्रत्येक चोट पर भारत माता की जय चिल्लाये। उसके बाद से उन्हें आजाद के नाम से जाने जाना लगा। चन्द्रशेखर आजाद ने झाँसी को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया। झाँसी के उनके निवास के दौरान ही पंडित रघुनाथ विनायक धूलेकर तथा सीताराम भाष्कर भगवती, चन्द्रशेखर के संपर्क में आये।

एच एस आर ए द्वारा किये गये साण्डर्स-वध और दिल्ली एसेम्बली बम काण्ड में फाँसी की सजा पाये तीन अभियुक्तों— भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने अपील करने से साफ मना कर दिया था। अन्य सजायाफ्ता अभियुक्तों में से सिर्फ 3 ने ही प्रिवी कौन्सिल में अपील की। 11 फरवरी 1931 को लन्दन की प्रिवी कौन्सिल में अपील की सुनवाई हुई। इन अभियुक्तों की ओर से एडवोकेट प्रिन्ट ने बहस की अनुमति माँगी थी किन्तु उन्हें अनुमति नहीं मिली और बहस सुने बिना ही अपील खारिज कर दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद ने मृत्यु दण्ड पाये तीनों प्रमुख क्रांतिकारियों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया। वे उत्तर प्रदेश की हरदोई जेल में जाकर गणेशशंकर विद्यार्थी से मिले। विद्यार्थी से परामर्श कर वे इलाहाबाद गये और जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास आनन्द भवन में भेंट की। आजाद ने पण्डित नेहरू से यह आग्रह किया कि वे गांधी जी पर लॉर्ड इरविन से इन तीनों की फाँसी को उम्र— कैद में बदलवाने के लिये जोर डालें। अल्फ्रेड पार्क में अपने एक मित्र सुखदेव राज से मन्त्रणा कर ही रहे थे तभी सीआईडी का एसएसपी नॉट बाबर जीप से वहाँ आ पहुँचा। उसके पीछे—पीछे भारी संख्या में कर्नलगंज थाने से पुलिस भी आ गयी। दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी में आजाद को वीरगति प्राप्त हुई। यह दुखद घटना 27 फरवरी 1931 के दिन घटित हुई और हमेशा के लिये इतिहास में दर्ज हो गयी।

असफाक उल्ला खान

22 अक्टूबर 1900 को आपका जन्म सरहानपुर यूपी में एक पठान परिवार में हुआ। 1922 में उनकी मुलाकात रामप्रसाद बिस्मिल से हुई तथा दोनों में गहरी दोस्ती हो गयी। असफाक उल्ला खान, राम प्रसाद बिस्मिल के साथ कांकोरी कांड में शामिल हुये। अन्य नेता जो

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

मद्रास में स्थापित किया गया। होम रूल की लोकप्रियता को देखते हुए सरकार ने श्रीमती ऐनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ उनके सहयोगी जॉर्ज अरुण डेल एवं वी. पी. वाडिया को भी गिरफ्तार किया गया। इस गिरफ्तारी के विरोध में एस सुब्रमण्यम अय्यर ने नाइट हुड की उपाधि त्याग दी।

लखनऊ पेक्ट (1916)

कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन 1916 में आयोजित किया गया। अम्बिका चरण मजूमदार को इस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। ऐनी बेसेन्ट तथा बाल गंगाधर तिलक के प्रयत्नों से मुस्लिम लीग ने कांग्रेस को राष्ट्रीय मुद्दों पर साथ देने का वचन दिया। सरोजनी नायडू ने मुहम्मद अली जिन्ना को हिन्दू-मुस्लिम एकता के दूत की संज्ञा दी। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौते को मुस्लिम लीग योजना के नाम से भी जाना जाता है।

मुहम्मद अली जिन्ना

मुहम्मद अली जिन्ना का जन्म 25 दिसम्बर 1876 को करांची में हुआ। इनके बचपन का नाम महोमेदाली था। इनके पिता का नाम जिन्नाभाई पूंजा तथा माता का नाम मिथि बाई था। आपने बेरिस्टर (वकालत) की पढ़ाई लंदन से प्राप्त की। पढ़ाई पूरी करने के बाद आप भारत लौट आये और बम्बई उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। जिन्ना का राजनीतिक जीवन दिसम्बर 1904 में आरंभ हुआ। जब उन्होंने कांग्रेस के 20वें वार्षिक अधिवेशन जिसका आयोजन मुम्बई में किया गया था में भागीदारी थी। जिन्ना कांग्रेस के उदारवादी नेताओं से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने फिरोजशाह मेहता, दादा भाई नौरोजी तथा गोपाल कृष्ण गोखले के उदारवादी विचारों से अत्यंत प्रभावित थे। 1906 में आगा खान के नेतृत्व में मुस्लिम नेताओं का एक प्रतिनिधि मण्डल वायसराय लॉर्ड मिण्टो से मिलने गया। मोहम्मद अली जिन्ना ने इसका विरोध किया। मोहम्मद अली जिन्ना ऑल इंडिया मुस्लिम लीग के गठन के भी खिलाफ थे। 1909 में मोहम्मद अली जिन्ना बॉम्बे से गर्वनर जनरल की विधायी परिषद में मुस्लिम प्रतिनिधि के रूप में चुने गये। 1912 में पहली बार मोहम्मद अली जिन्ना ने मुस्लिम लीग का सदस्य न होते हुए भी उसके वार्षिक अधिवेशन को संबोधित किया। जब महात्मा गांधी 1912 में भारत आये तो मुहम्मद अली जिन्ना ने उनका स्वागत किया। 1916 में कांग्रेस ऑफ मुस्लिम लीग के बीच समझौता कराने में मोहम्मद अली जिन्ना ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद मोहम्मद अली जिन्ना और कांग्रेस में मतभेद आरंभ हो गया। 1920 में मोहम्मद अली जिन्ना ने कांग्रेस त्याग दिया। 1926 से मोहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल का समर्थन करने लगे और कांग्रेस छोड़कर मुस्लिम लीग में शामिल हो गये। 1930 में मोहम्मद अली जिन्ना ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की तरफ से भाग लिया। इन्हें पाकिस्तान का कायदे आजम भी कहा जाता है।

अगस्त घोषणा (1917)

1914 में प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हो गया इस युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों का साथ दिया। इससे प्रसन्न होकर 20 अगस्त 1917 को भारत सचिव लॉर्ड माण्टेग्यू ने यह घोषणा की कि भारत के शासन में भारतीयों को धीरे-धीरे भागीदारी प्रदान की जायेगी इस घोषणा को अगस्त घोषणा के नाम से जाना जाता है।

माण्टेग्यू चेम्स फोर्ड सुधार या भारत शासन अधिनियम 1919

(1) भारत सचिव की परिषद् में बदलाव

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

पहला शासन गवर्नर का था जो कि आरक्षित विषयों से संबंधित था तथा द्वितीय शासन प्रांतीय विधायिका का था। सभी प्रांतीय विधायिकाएँ एक सदनीय थी तथा उन्हें प्रांतीय विधानसभा कहा जाता था। प्रांतीय विधानसभाओं के 70 प्रतिशत निर्वाचित तथा 30 प्रतिशत गवर्नर के द्वारा नामित होते थे। मुसलमानों के अतिरिक्त सिक्खों, आंग्ल भारतीयों, ईसाईयों, यूरोपियों को भी अलग निर्वाचन का अधिकार मिला।

(5) नये सुधार 10 वर्ष पश्चात् किये जाने थे।

रौलेट एक्ट

लार्ड चेम्सफोर्ड के वायसराय होने के दौरान 1918 में ब्रिटिश सरकार द्वारा एक समिति का गठन किया गया। जस्टिस हेनरी रौलेट इस समिति के अध्यक्ष थे। इस समिति का मुख्य उद्देश्य भारत में कान्तिकारी गतिविधियों को नियंत्रित करने के संदर्भ में सुझाव देना था। इस समिति के सुझावों पर 1919 में एक अधिनियम बनाया गया, जिसे रौलेट एक्ट (The Anarchical and Revolutionary Crime Act, 1919) कहा जाता है। इस अधिनियम में सरकार को ऐसे लोगों को गिरफ्तार करने व जेल भेजने का असीमित अधिकार दिया। जिन पर सरकार को संदेह हो। इस अधिनियम का कांग्रेस द्वारा विरोध किया गया। महात्मा गाँधी ने इसे काला कानून की संज्ञा दी। उन्होंने 6 अप्रैल 1919 को इसके विरोध में सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। 8 अप्रैल 1919 को गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया।

जलियां वाला कांड

10 अप्रैल 1919 को पंजाब के दो प्रमुख नेता डॉ. सत्यपाल तथा सैफु दीन किचलू को रौलेट एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पंजाब में अशांति उत्पन्न हो गई। 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हुये। उन्हें मार्शल ला की जानकारी नहीं थी। जनसभा शुरू होने से पूर्व ही जनरल ओ डायर जो पंजाब सेना का मुखिया था, ने गोली चलाने का आदेश दे दिया इससे हजारों गोलीबारी का शिकार हुए। जलियांवाला बाग काण्ड ने भारत ब्रिटेन संबंधों को एक नया मोड़ दिया। गाँधी जी जो कि ब्रिटिश सरकार के पक्के समर्थक थे। ब्रिटिश सरकार के असहयोगी बन गये। सरदार उधमसिंह नामक एक भारतीय देशभक्त ने 1940 में जनरल ओ डायर की लंदन में गोली मारकर हत्या कर दी।

जलिया वाला बाग कांड के समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर तथा सैन्य अधिकारी रेगिनाल्ड रेक्स डायर था जिसने गोली चलाने का आदेश दिया था। जलिया वाला बाग कांड की जांच करने के लिए सरकार ने 19 अक्टूबर 1919 को हंटर आयोग के गठन की घोषणा की। इस कमीशन ने डायर को बाइज्जत बरी कर दिया।

खिलाफत आंदोलन

1918 में ब्रिटेन ने तुर्की को अपने कब्जे में ले लिया। दुनिया भर के मुसलमान तुर्की के सुल्तान को अपना खलीफा मानते थे। तुर्की के पतन के बाद खलीफा को अपदस्थ कर दिया गया। इससे भारत के मुसलमानों की धार्मिक भावनाएं आहत हुईं फलस्वरूप मोहम्मद अली और शौकत अली भाईयों ने खिलाफत आंदोलन आरंभ कर दिया। मौलाना अबुल कलाम आजाद तथा मोहम्मद अली जिन्ना जैसे नेताओं ने इस आंदोलन का समर्थन किया। 17 अक्टूबर 1919 को खिलाफत दिवस के रूप में मनाया गया। जून 1920 में इलाहाबाद में कांग्रेस ने भी खिलाफत आंदोलन का समर्थन करने की घोषणा की।

असहयोग आंदोलन, 1920-22

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

1 फरवरी 1922 को गांधीजी ने वायसराय को पत्र लिखा जिसमें यह कहा गया था कि अगर 7 दिनों के भीतर राजनीतिक बंदियों को रिहा नहीं किया गया और प्रेस को सरकार के नियंत्रण से मुक्त नहीं किया तो वे करों की नाअदायगी समेत सामूहिक रूप से बारदोली से सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करेंगे।

किंतु, सप्ताह समाप्ति से पूर्व ही 5 फरवरी, 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर पुलिस ने राजनीतिक जुलूस पर गोलीबारी कर दी, प्रतिक्रियास्वरूप जनता ने पुलिस थाने पर हमला कर दिया। इसमें पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी गयी।

इस घटना के पश्चात् गांधीजी को यह विश्वास हो गया कि भारत अभी व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन के लिए तैयार नहीं है। परिणामस्वरूप, 12 फरवरी, 1922 को बारदोली में आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में आंदोलन को स्थगित करने का निर्णय लिया गया। मार्च 1922 में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें असंतोष फैलाने के जुर्म में न्यायाधीश ब्रूमफील्ड द्वारा 6 वर्ष के कारावास का दंड दिया गया। किंतु, 5 फरवरी, 1924 को स्वास्थ्य कारणों से उन्हें रिहा कर दिया गया।

असहयोग आंदोलन के स्थगित होते ही खिलाफत के मुद्दे का भी अंत हो गया, जिसके फलस्वरूप देश में हिंदू-मुस्लिम एकता भंग हो गई तथा सांप्रदायिक तनाव स्थिति पैदा हो गई। केरल के मालाबार क्षेत्र में मोपला किसानों ने भू-सामंतों और साहूकरों के विरुद्ध भयंकर विद्रोह और रक्तपात किया। असहयोग आंदोलन अपने किसी भी घोषित उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सका। गांधीजी द्वारा एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त करने का वादा पूरा नहीं किया जा सका और नही ब्रिटिश सरकार द्वारा पंजाब में किए गए अन्यायों का निवारण हुआ। किंतु, इसकी दीर्घकालिक उपस्थितियाँ इसकी तात्कालिक हानियों से कहीं अधिक थीं। इसने कांग्रेस की शक्तियों को कहीं अधिक बढ़ा दिया था तथा यह पहले से अधिक संगठित हो गयी थी। इसने देशवासियों के भीतर स्वतन्त्रता प्राप्ति की प्रबल इच्छाशक्ति जागृत की तथा औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने के लिए जनता को प्रोत्साहित किया।

चौराचोरी घटना

चौरा चोरी की घटना ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया। चौरा चोरी यूपी में स्थित है। 5 फरवरी 1922 को कुछ आक्रोशित किसानों ने स्थानीय थाने पर हमला कर 12 पुलिस कर्मियों को मार डाला। इस घटना ने संपूर्ण परिदृश्य को बदल कर रख दिया। गांधी जी इस घटना से सदमे में आ गये। उन्होंने असहयोग आंदोलन को वापिस लेने का निर्णय लिया, क्योंकि उनके ही शब्दों में हिंसा की कीमत पर आजादी नहीं चाहते। 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन बंद कर दिया गया।

स्वराज्यपार्टी

महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन की स्थगन की घोषणा के बाद कांग्रेस से अपील की गई। कांग्रेस के नेता 1919 के अधिनियम के अधीन होने वाले आम चुनाव में भाग न लें। क्योंकि यह ब्रिटिश सरकार का सहयोग होगा। मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास तथा एन.सी. केलकर आदि नेताओं ने महात्मा गांधी की यह अपील ठुकरा दी। इन नेताओं के अनुसार हम सरकार का बेहतर विरोध सदन की बाहर के अपेक्षा सदन के भीतर कहीं अधिक बेहतर तरीके से कर सकते हैं। इसलिए इन नेताओं ने आगामी चुनावों में भाग लेने का निर्णय लिया तथा 1 जनवरी 1923 को एक नई कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी की स्थापना की। यह कांग्रेस का दूसरा विभाजन था। सितम्बर 1923 में चुनाव आयोजित किये गये। स्वराज्य पार्टी ने 103 में से (केन्द्रीय विधान सभा के निर्वाचित सीट में से) 45 सीटों पर विजय प्राप्त की। 11 राज्यों में 8 प्रांतों में उन्हें स्पष्ट बहुमत मिला। 1925 में सी.आर. दास की मृत्यु के पश्चात् यह पुनः कांग्रेस की मुख्य धारा से जुड़ गया।

साइमन कमीशन

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

इस समिति के गठन का उद्देश्य ब्रिटिश परमसत्ता और राजाओं के बीच के संबंधों से जुड़े मुद्दों की जाँच करना था। इसका काम राजाओं के मध्य के संबंधों की बेहतरी के लिए सुझाव देना था, ताकि ब्रिटिश भारत और देसी राजाओं (भारतीय रियासतों) के बीच संतोषजनक संबंधों की स्थापना की जा सके।

लाहौर अधिवेशन (26 दिसम्बर 1929)

कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन रावी नदी के तट पर लाहौर में बुलाया गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता युवा नेता जवाहरलाल नेहरू के द्वारा की गई। नेहरू जी ने तिरंगे को कांग्रेस के नये झंडे के रूप में अपनाया तथा 26 जनवरी (प्रत्येक वर्ष की) को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया तथा उन्होंने पूर्ण स्वराज्य को राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य बताया। कांग्रेस कार्य समिति ने गांधी जी के नेतृत्व में एक नया आंदोलन प्रारंभ करने का निर्णय लिया।

गांधी जी ने 'यंग इंडिया' में एक लेख प्रकाशित कर सरकार के समक्ष ग्यारह सूत्रीय मांगे रखीं तथा इन मांगों को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिये उसे 31 जनवरी 1930 तक का समय दिया। ये मांगे थीं—

1. सिविल सेवाओं तथा सेना के व्यय में 50 प्रतिशत तक की कमी की जाये।
2. नशीली वस्तुओं के विक्रय पर पूर्ण रोक लगायी जाये।
3. सी.आई.डी. विभाग पर सार्वजनिक नियंत्रण हो या उसे खत्म कर दिया जाये।
4. शस्त्र कानून में परिवर्तन किया जाये तथा भारतीयों को आत्मरक्षा हेतु हथियार रखने का लाइसेंस दिया जाये।
5. सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाये।
6. डाक आरक्षण बिल पास किया जाये।
7. रुपये की विनिमय दर घटाकर 1 शिलिंग 4 पेन्स की जाये।
8. रक्षात्मक शुल्क लगाये जायें तथा विदेशी कपड़ों का आयात नियंत्रित किया जाये।
9. तटीय यातायात रक्षा विधेयक पास किया जाये।
10. लगान में पचास प्रतिशत की कमी की जाये।
11. नमक कर समाप्त किया जाये एवं नमक पर सरकारी एकाधिकार खत्म कर दिया जाये।

फरवरी 1930 तक, सरकार द्वारा इन मांगों के संबंध में कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने के कारण साबरमती में कांग्रेस कार्यसमिति की हुई बैठक में यह निर्णय गांधीजी पर छोड़ दिया गया कि सविनय अवज्ञा आंदोलन किस मुद्दे को लेकर, कब और कहाँ से शुरू किया जाये। फरवरी के अंत में गांधीजी ने नमक के मुद्दे को सविनय अवज्ञा आंदोलन का केंद्रीय मुद्दा बनाने का निश्चय किया।

दांडीमार्च

पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गांधी जी सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निर्णय लिया। अपने 78 अनुयायियों के साथ उन्होंने 12 मार्च 1930 को गांधी ने गुजरात के अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से गुजरात के ही नौसारी जिले में स्थित दांडी की ओर प्रस्थान किया जहाँ उन्हें नमक कानून तोड़ना था। उन्होंने 24 दिनों की यात्रा में 240 मील की यात्रा तय करके 5 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचे तथा अगले दिन 6 अप्रैल 1930 को सुबह आपने मुट्ठी भर नमक उठाकर नमक कानून तोड़ने की घोषणा की यही सविनय अवज्ञा आंदोलन का उद्घाटन था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

9 अप्रैल को गांधी जी ने एक निर्देश जारी करके आंदोलन के लिये निम्न लिखित कार्यक्रम प्रस्तुत किये—